



અમીરે અહેલે સુનાત રિયકાર કી કિતાબ "નેરી કી દા'વત" સે ખિયે જાને મવાદ કી તીસરી ઉસી

Riyakaar Ki Alaamaat (Gujarati)

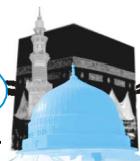
રિયાકાર કી આલામાત

કુલ સંખાર 35

શૈખે તરીકત, અમીરે અહેલે સુનાત, જાનિયે દા'વતે ધર્મામી, હિન્દુત અલામા મૌલાના અબૂ જિલાબ

મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અતાર કાદિરી રાફી

دکٹر
العسالی



الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوٰةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

کتاب پڑنے کی دعاء

ایو : شے بے تاریکت، امیرے اہلے سُنّت، بانیے دا'vatے ہلکھالی، ہجرت احوالات
مولاںہا ابتو بیلائل مुہتمم ہلکھال اتھار کاٹری رجھی رجھی دیں کتاب یا ہلکھالی سبک پڑنے سے پہلے جے لے میں دی ہوئی ہو آپ پڑ لیجیے
جے کوئی پڑنے یا داد رہے گا۔ ہو آپ یہ ہے :

اللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَإِنْشِرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَالْجَلَلِ وَالْأَكْرَامِ

تراجما : اے احوالات ! ہم پر ہلکھلے ہیکھلے کے دروازے بول دے اور ہم پر اپنی
رہنمات ناچیل فرماء ! اے ازمات اور بوجوہی والے۔ (المُسْتَنْدَرُفُ ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

نوت : ایک ایک بار ہر دو شریک پڑ لیجیے۔

تالیبے گمے مددینا

و بکیا

و ماجھر

13 شعبان ہلکھلہ 1428 ھ۔



ریاکار کی احوالات

پہلے کتاب (ریاکار کی احوالات)

شے بے تاریکت، امیرے اہلے سُنّت، بانیے دا'vatے ہلکھالی، ہجرت احوالات
مولاںہا ابتو بیلائل م MUہتمم ہلکھال اتھار کاٹری رجھی رجھی دیں دامت برکاتہم العالیہ نے ہر دو
ذبائن میں تھریڑ فرمائی ہے۔

مجلیسے تراجم (دا'vatے ہلکھالی) نے ہس کتاب کو گوجراتی رسمیں بھت میں
تتریب دے کر پہاڑ کیا ہے اور مکتبات مددینا سے شاہزاد کرવایا ہے۔ ہس میں اگر
کسی جگہ کمی بے شی پا ائے تو مجلیسے تراجم کو (ب جریان مکتب، ہلکھلہ یا
SMS) میڈیا فرمائی کر سوابع کماہیے۔

رائبیا : مجلیسے تراجم (دا'vatے ہلکھالی)

مکتبات مددینا سیلکٹڈ ہائیس، ایلکٹریکس کے سامنے، تین دروازا،
اہمادھاباڈ-1، گوجرات، ہندیا

MO. 98987 32611 • Email : hindibook@dawateislamihind.net



ਕੁਰਮਾਨੇ ਮੁਸਤਫਾ : ਜਿਥੁਂ ਕੇ ਪਾਸ ਮੇਰਾ ਜਿਕ ਹੁਵਾ ਔਰ ਉਸ ਨੇ ਮੁੜ ਪਰ ਹੁਕੂਮੇ ਪਾਕ ਨ ਪਣਾ
ਤਖ਼ਿਆਕ ਵਾਲ ਬਾਦ ਅਪਣਾ ਛੀ ਗਿਆ। (بِسْمِ اللّٰہِ التَّعَالٰی عَلٰی وَسُلٰمٍ)

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

ਧਾਰਮਿਕ ਮੁਨ੍ਹਾਂ “ਨੇਕੀ ਕੀ ਦਾ’ਵਤ” ਕੇ ਸਫ਼ਲਾ 65 ਤਾਂ 99 ਦੇ ਲਿਆ ਗਿਆ ਹੈ।

રિયોકર્ડીંગ અલામેન્ટ

દુઆએ અતાર

| या रज्बल मुस्तक्ष ! जो कोई रिसाला “रियाकार की अलामात” के 35 सङ्ख्यात पढ़ या
| امین بِجَاهِ الْبَيْتِ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ . سुन ले उस से रियाकारी की आँखात से महकूज़ फरमा।

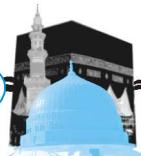
ਦੂਜੇ ਸ਼ਾਰੀਰ ਕੀ ਝੱਗੀਲਤ

﴿تَمْذِيٰ حَجَّ٢٧، ص٢٧﴾ (٤٨٤ حدیث) اک صَلَّی اللَّهُ تَعَالَیٰ عَلَیْهِ وَآلِہِ وَسَلَّمَ کے ماحبوب، دانا اے گویوں کا ہر بھائی کے لئے غرّ و جلّ نیشنال سٹار کا نام تکریب نیشنال ہے: بے شک بروری کی خواہ مات لوگوں میں سے میرے کریب تر وہ ہو گا جو مुझ پر سب سے لیکھا دے دے سکے۔

(تیرمذی ج ۲ ص ۲۷ حدیث ۴۸۴)

ریاکار پر ۴۰۰ نتھیں حرام ہے : شاہنشاہی دو ۹۷۱، مکہ مدینہ کے سو لٹاں
عَزَّوَجَلَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللَّهُ وَسَلَّمَ کا فرمائے ہی بشرط نیشان ہے : اولیٰ احمد رضی اللہ عنہ
۴۰۰ نتھیں حرام کر دی ہے۔

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! જો ઈમાન કે સાથ હુન્યા સે જાએ, અલ્લાહ ગુરૂજાળ ચાહે તો બે હિસાબ બખ્શા જાએ, અગર વોહ ચાહે તો સત્તા દે કર જન્નત મેં દાખિલ ફરમાએ. લિહાજા રિયાકાર પર જન્નત હરામ હૈ, કી શર્હ બયાન કરતે હુએ હજરતે અલ્લામા મુહમ્મદ અબ્ડુરરાખી મુનાવી ઉલ્-લુલ્હ બયાન કર્દાં હદીસે પાક કે તહૃત ફરમાતે હોય : યા'ની રિયાકાર મુસલ્માન ઈન્ઝિદાઅન જન્નત મેં



ઉર્જુ જલ દસ પાક પણ આલ્લા હ કરમાને મુસ્તકા જિયસ ને મુજુ પર એક બાર હુક્કે પાક પણ અનુભાવ રહ્મતે ભજતા હૈ (સ્લ).

ਦਾਖਿਲ ਨ ਹੋਗਾ।

(**فِيْضُ الْقَوِيرِ لِلْمَنَاوِي** ج ٢ ص ٢٨٦ تَحْتَ الْحَدِيثِ (١٧٢٥)

ખતાએ મેરી અફવ ગફફાર કર દો

ਰਿਧਾਕਾਰਿਯਾਂ ਦੀਆਂ ਸੰਪਰੀਤੀਆਂ

रियाकारी को इस भिसाल से समझिये : हुज्जतुल ईस्लाम हजरते सच्चिदुना

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِيٍّ

रियाकारी को ईस भिसाल से समजाते हैं : म-सलन कोई शब्द सारा हिन बादशाह

के सामने खड़ा रहे जिस तरह भूद्वाम की आदत होती है लेकिन उस का मकसद

બાદશાહ કા કુર્બ હાસિલ કરના ન હો બલ્કે ઉસ કી કિસી કનીજ કો દેખના હો તો

યેહા (યા'ની ઉસ શર્ષણ કા ખડા હોના) બાદશાહ કે સાથે યક્તિનન મજાક હૈ. તો ઈસ એ

કિયાં કાબિલે હક્કારત વ નહુરત ઔર કૃયા આત હોળી કે કોઈ શખ્સ અદ્ભુત

તાથા કી રૂબાદત (તું હે રમણો વિલાયાર અન્ને કી વિખાને હે લિયે હો જો તું કી)

બિજુલાત (યા'ની જાતિ તૈરં પડ) ન નહિએ મણોંચા અદતા હૈ ન નહિએ

(احياء العلوم ج ٣ ص ٣٦٩ ملخصا)

ਇੱਖਲਾਸ ਨੇਕਿਆਂ ਮੋਹਰੀ ਰਾਵਾਂ ਦੀ ਸੁਧਾਰੀ ਕਾਰੀਮ ਹੈ

ਅਕਲੇ ਸਲੀਮ ਹੈ ਮਰ੍ਝੇ ਕਲਬੇ ਸਲੀਮ ਹੈ

રિયા કી ટા'રીક : રિયાઝારી કે બા'જ નક્સાનાત કી મા'લમાત તો હઈ. આઈયે !

અબ યેહ મા'લમ કરતે હું કે ગુનાહોં ભરી રિયાકારી કહુતે કિસે હું ! તો સન્નિયે : રિયા

કી તા'રીઝ યેહ હૈ : “અહ્લાદી કી રિઝા કે ઈલાવા કિસી ઓર ઈરાદે સે ઈબાદત

ਫੁੜਾ।” ਗੋਯਾ ਈਭਾਵਤ ਸੇ ਥੇਹ ਗਰੜ ਲੀ ਕੇ ਲੋਗ ਈਸ ਕੀ ਈਭਾਵਤ ਪ੍ਰ ਆਗਾਹ ਲੀ ਵਾਕੇ

વોહ તેન લોગોં એ માલ બટોરે થા લોગ તિસ દી ના'રીક કરેં થા તિસે ને હું આદમી અમણે

આ તેણે દ્વારા લખેલ વગૈરા દંડનામણ કરી શકતાં એવું હોય કે

(آلرزاوجراج ۱ ص ۷۶)



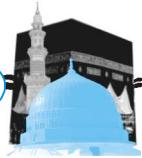
فَرَمَأَنِ مُوسَىٰ لِلَّهِ عَزَّلَهُ وَالرَّسُولُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : جَوَ شَابَسَ مُوسَىٰ پَرَ دُرِّدَے پَاکَ پَدَنَا بُلَلَ گَيَا وَهُوَ جَنَّاتَ کَا رَاسَتَا بُلَلَ گَيَا۔ (بُرْج)

ریاکاری کی 80 میساں

(جو میساں پےش کی جا رہی ہے وہ اگرچہ ریاکاری ہی کی ہے تاہم کوئی جگہ نیخت کے فرک سے اہکام میں تبدیلی ہو سکتی ہے)

نماں کے مُ-تَعَالِیٰک ریاکاری کی 11 میساں

- ﴿1﴾ کسی شابس کا ہس لیے پابندی سے نماں پدھنا کے لوگ اس کو پکا نہماں کر دے۔
- ﴿2﴾ کسی ہڈیج کا تراویہ میں ہس لیے ”مُسَلَّلَا سُونَانَا“ یا’نی کورآنے کریم پدھنا کے پےسے میلے گے۔
- ﴿3﴾ اپنی شادی والے دین یا گر میں مایمت کے مौکا پر سُنّاتوں بارے ہجتیماں میں ہائیکری دننا یا بآ جماعت نماں کی پابندی کرننا یا سدا اے مددینا لگانا (یا’نی مُسَلَّلَا ناموں کو نمازوں فرج کے لیے جگانے کے لیے گر سے نیکلنا) تاکے لوگ اش اش کر دے کے واہ بڑی! اسے مौکا پر بھی ہس نے ہن نے کاموں کی ہڈی نہیں کی! (بواہ ہس کے ہلکا بیلا تکلیف ناگے ہوتے ہوں!)
- ﴿4﴾ لوگوں کو مُ-تَعَالِیٰسِر کرنے کے لیے اس کے سامنے ہتبیان اور بُشُوُو اور بُعُوُو کے ساتھ نماں پدھنا۔
- ﴿5﴾ اگر بडی رات کے ہجتیماںے جیکو نا’ت میں شعب بیداری کرنے یا کسی رات تہذیب پدنے کا مौکا میلے تو دین میں لوگوں کے سامنے ہس لیے آنے میں ملننا یا اُنگاراہیاں و گیرا لئنا کے سب کو پتا چل جائے کے یہہ رات سوچا نہیں بلکے نہکیوں کے لیے چاگتا رہا ہے۔
- ﴿6﴾ دُسروں کی مُجُوُدگی میں ہس لیے ہشراک و یاشت اور ایسا بیان و تہذیب ادا کرننا تاکے لوگ نہ لئے پدھنے والہ تسلیم کرے۔
- ﴿7﴾ کسی کے لیے لوگوں کا ہُسنے جن ہو کے یہہ تہذیب گوچار اور نہل رہوں کا آہا ہے۔ جب کے ہکیکت ن اسے ن ہو مگر اس کے سامنے کوئی ہن بُسُوُسیٰ ات کے ساتھ تآڑک رکھا اے تو یہہ ہس نیخت کے ساتھ مُسکُر ا کر سر گوکا لے کے ہن پر میری نہکاری کا تَعَسُّر کاہم رہے۔



रियाकार की अलामात

4

मदीनतुल
मुनव्वरह

मक्कतुल
मुकर्मेह

इसमाने मुस्तका : مُنْتَهِيَ الْحَلَقَاتِ عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَالرَّحْمَةُ بِهِ : जिस के पास भेरा जिक हुवा और उस ने मुझ पर हुड़दे पाक न पढ़ा ताहकीक वाह बह बाजा हो गया। (ज़िहार)

﴿8﴾ तहज्जुद में उठने की सआदत भिलने पर ईस लिये और और से खांसना या ऐसे मुआ-मलात करना के जौजा या घर के दीगर अफ्फराद जाग जाएं और देख कर मु-तअस्सिर हों के ओहो ! येह तहज्जुद के लिये उठा है !

﴿9﴾ नमाज के बाद मस्जिद में ईस लिये देर तक ठहरा रहना के लोग नेक आदमी करार हैं.

﴿10﴾ नमाज में पहली सँझ का ईस लिये अेहतिमाम करना के लोग मु-तअस्सिर हों, तारीफ करें.

﴿11﴾ अपनी पहली सँझ या जमाअत रह जाने पर लोगों के सामने ईजहारे अफ्सोस करना ताके लोग मु-तअस्सिर हों और ईस को पहली सँझ और जमाअत का हरीस समझें.

मुबलिगीन के लिये रियाकारी की 18 मिसालें

﴿1﴾ ईजतिमाअ वगैरा में ईस लिये बयान करना के लोग ईस के बयान की तारीफ करें और अस्था मुबलिग कहें.

﴿2﴾ मुबलिग का बयान के दौरान दिल पर चोट करने वाले जुम्ले गरज दार आवाज में बोलना या पुरजोश अन्दाज में अश्वार पठना ताके सामिर्झन तारीफी अन्दाज में नारा लगाएं, बुलन्द आवाज से اللہ سُبْحَانَهُ كहें, वाह वाह ! मरहबा ! कह कर दाएं, बयान की तारीफ करें, शोला बयान मुबलिग कहें.

﴿3﴾ बयान में ईस लिये उम्मा जुम्ले, दक्कि अल्फाझ, अ-रभी व ईंग्रेजी मक्कुले वगैरा शामिल करना के लोग पढ़ा लिखा समझें और ईस से मु-तअस्सिर हों.

﴿4﴾ सुनने वाले उसे राहे खुदा جूँगूँग में कुरबानियां देने वाला तसव्वुर करें ईस लिये बयान के आगाज में मुबलिग का म-सलन ईस तरह के कलिमात कहना : मैं 6 दिन से मुसल्सल सँझर पर हूँ, ईस वक्त भी 13 धन्टे का सँझर कर के यहां पहोंचा हूँ, बहुत थका हुवा हूँ, अभी खाना भी नहीं खाया मगर बयान करने हाजिर हो गया हूँ वगैरहा.

﴿5﴾ ईस्लामी भाईयों को म-सलन ईस तरह कहना : मैं तो 25 माह से म-दनी काहिले का मुसाफिर हूँ, वक़हे मदीना हूँ, ईसी रोज से रोजाना बयान कर रहा हूँ,



इसमाने मुस्तका : مَلِئُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस मरतबा सुअू और दस मरतबा शाम हुडे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शक्तियाँ भिलेंगी। (ابू इ़ुग्द)

आज कल कई रोज़ से मुसल्लियों में भी एक बड़ा धूमधूम का गोपनीय विषय है कि इन दस मरतबों की तरकीब क्या है, इन मरतबों का अवलोकन कैसे करें और इन मरतबों की विधि क्या है। इन दस मरतबों की तरकीब के बारे में इन दस मरतबों का अवलोकन करने वालों में बहुत से व्यक्ति अपनी विचारों को अपनाते हैं, लेकिन इन दस मरतबों की विधि के बारे में बहुत कम विवरण मिलता है।

6. जोश में आ कर एक ही दिन में **झाने सुन्नत** से पचास या सो बार दर्स हो तालना ताके खूब वाह वाह हो, हौसला अफ़ज़ाई के नाम पर तारीफ़ हो, दावते ईस्लामी के बड़े जिम्मेदारान से पीठ थपकवाने और तोहङ्के पाने की तरकीब हो।

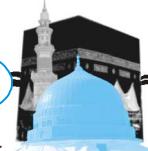
7. किसी बड़ी शज्जिस्यत के सामने सुन्नतों भरा बयान करने का भौकअ भिले तो खूब बना संवार कर उम्दगी से बयान करना ताके वोह ईस से मु-तअस्सिर हो, ईस की तारीफ़ करे।

8. मुबल्लिग का सियासी, हुक्मती या हुन्यवी शज्जिस्यत के साथ मुरासिम रखना ताके लोगों को मालूम हो या खुद बता सके के हुलां हुलां शज्जिस्यत मुज से मु-तअस्सिर है, येह लोग मुझे हुआओं का कहते हैं, हुलां ने तो मेरे हाथ चूम लिये, ईन के यहां मेरा बड़ा ऐहतिराम है।

9. किसी मुबल्लिग का तरकीबें बनाना के किसी तरह कोई अङ्गसर या वज़ीर वगैरा उन के घर आ जाए ताके लोगों पर जाहिर हो के भर्द ! बड़े बड़े लोग ईस के अकीदत मन्द हैं ईस से हुआ करवाने या ब-र-कत हासिल करने के लिये हाजिर होते हैं।

10. किसी हुन्यवी बड़ी शज्जिस्यत को ईस लिये ईस्लाह की बात कहना या खता पर टोकना के लोगों पर येह असर पड़े के वाह भर्द वाह ! येह तो बड़े बड़ों से भरउब नहीं होता और हुक्मे शरीअत बयान करने में किसी का भी लिहाज नहीं करता।

11. किसी बड़े आदमी को दाढ़ी रखवा दी या बदनाम शब्द को तौबा पर आमादा कर लिया तो अपनी जात से मु-तअस्सिर करने के लिये बयान में या ईस्लामी भाईयों में अपने ईस कारनामे (या म-दनी बहार) का तज़किरा करना।



इसमाने मुस्तकः ﷺ : जिस के पास भेरा जिक हुवा और उस ने मुज पर हुरूद शरीक न पढ़ा उस न ज़क्का की। (بِهِرَّةْ)

12) लोगों में बैठे हुए या दौराने बयान या गुफ्त-गू करते हुए इस लिये निगाहें नीची रखना के देखने वाले मु-तअस्सिर हों, हया से नज़रें झुकाने वाला और आंखों का कुफ्ले मदीना लगाने वाला कहें। (य्वाह जब लोगों से जुदा हो तो आंखें हर तरफ धूमती, फ़िरती और खूब भटकती हों)

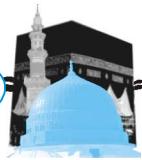
13) तन्हाई में खाशिआना नमाज पढ़ने या निगाहें नीची रखने की मशक करना ताके दूसरों की मौजू-दग्धी में भी नमाज में खुशूअ काईम रहे, निगाहें नीची रख सके और लोगों के छिलों में मकाम बना सके। (ये ह दूनी रिया है या'नी तन्हाई वाली मशक भी रिया है के इस का मक्सूद रिजाए इलाही नहीं, बन्दों पर अपनी पारसाई का सिक्का जमाना है)

14) पाबन्दी से फ़िके मदीना करते हुए म-दनी इन्आमात की खाना पुरी करने और दूसरों पर म-दनी इन्आमात पर अमल की तादाद जाहिर करने से मक्सूद ये ह हो के इस की तारीफ हो, भिसाल दी जाए के हुलां म-दनी इन्आमात का पक्का आभिल है, उस का इतने इतने म-दनी इन्आमात पर अमल है।

15) किसी का इस लिये दीन की जिद्दत करना, म-दनी काफ़िलों में सझर करना, दीनी कामों के लिये खूब वक्त देना और इस की खातिर मशक्कतें बरदाशत करना के लोग इस की कुरबानियों की वाह वाह करें, दीनी कामों के लिये इस को खूब मु-तहरिक (ACTIVE) तसव्युर करें।

16) हुन्या के मुख्तलिफ़ भमालिक के अन्दर राहे खुदा में इस नियत से सझर करना के इस्लामी भाई इस की कुरबानियों की दाद हैं, इस की भिसालें बयान करें, इस को बैनल अक्वामी मुबलिग करें।

17) इस लिये पाबन्दी से सदाए मदीना लगाना या'नी लोगों को नमाजे फ़ज्ज के लिये जगाने के लिये घर से निकलना के इस की तारीफ हो के ये ह न अधेरे से धबराता हैं, न कुतों के भौंकने से उरता है, न ही सर्दी और बारिश की परवाह करता है नीज रात सोने में चाहे कितनी ही ताखीर हो जाए ये ह फ़िर भी सदाए मदीना का नागा नहीं करता।



इरमाने मुस्तका مصلی اللہ علیہ وآلہ وسلم : جो मुज पर रोजे जुमुआ हुवृद शरीफ पढेगा। मैं कियामत के दिन उस की शक्तिअत करूँगा। (السلام)

18) किसी को नेकी की दावत इस नियत से देना के लोग इसे मुसल्मानों का अजीम और खाऐ तसव्वुर करें या किसी को बुराई से इस लिये मन्य करना के लोग इस से मु-तअस्सिर हों के “बड़ा गैरत मन्द शज्ज़ है, बुराई देख कर बिल्कुल खामोश नहीं रह सकता।” (काश ! अपने घर में होने वाली बुराई देख कर भी गैरत आया करे, दिल जला करे और इस्लाह की सआदत की कोशिश नसीब हो)

ना'त शरीफ पठने, सुनने वालों के लिये रियाकारी की 16 बिसालें

1) इज्जतिमाऊ वगैरा में इस गरज से तिलावत करना, ना'त शरीफ पठना के लोग नोटें चलाएं, इसे खाना खिलाएं, लिफाफा पेश करें, सूटपीस हाजिर करें, आवाज व अन्दाज वगैरा की दाद हैं, तलझुझ की अदाएँगी के उख्लूब और पढे गये कलाम की ता'रीफ करें।

2) ना'त शरीफ पढ़ते हुए मुप्तलिफ़ अशआर पर हडाईके बज्शाश शरीफ वगैरा के ब क्सरत अशआर इस लिये भिलाना के लोग कहें : वाह वाह ! इस को तो बहुत सारे और कैसे मुश्किल मुश्किल अशआर याद हैं !

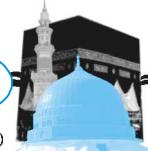
3) किताब से देखे बिगैर इस लिये ना'तें पठना के सुनने वाले कहें वाह भई वाह ! इस को बहुत सी ना'तें जबानी याद हैं !

4) ना'त ख्वान (या मुबलिंग) का किसी मुश्किल शे'र की इस लिये शर्ह बयान करना ताके लोग इसे झटीन समझें और इस की मालूमात की दाद हैं।

5) नायाब कलाम तलाश कर के या किसी कलाम की नई तर्ज बना कर (या चुरा कर) धूपा कर रख कर बड़ी रात वगैरा किसी खास मौक़ा पर कसीर इज्जतिमाऊ में ना'त ख्वान का इस लिये पठना के सामिठन जूम उठें और ऊर ऊर से اللہ سبْحَنَ كَرِّهَ كर दाद हैं, खूब ना'रे लगाएं और दूसरे ना'त ख्वान भी ता'रीफ करने पर मजबूर हों।

6) ना'त ख्वानी, तिलावते कुरआन, बयान वगैरा पर ब-यक वक्त इस लिये उभूर हासिल करना के लोग इस को “हर फ़िन मौला” कहें।

7) मालदारों के यहां रग्बत के साथ जाना, उन की या किसी भी दीनी व दुन्यवी शज्जियत



इसमाने मुस्लिम : مُحَمَّدُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : मुज पर हुड्डे पाक दी कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तहारत हैं। (इत्ति)

की मौजूदगी में इस लिये ना'त शरीफ पढ़ना के मालदार “नोटें” चलाए, शप्स्स्यत की सदाए दादो तहसीन से नक्स “लझूत” पाए.

१८ बैड़नी ममालिक में ईज़्ज़त व शोहरत या नज़रानों की ख्वाहिश पर ना'त पढ़ने जाना नीज ईस से येह भी मक्सूद हो के अपने नाम के साथ “बैनल अक्वामी शोहरत याइता ना'त ख्वां” कहा और ईश्तिहारात में लिखा जाए.

१९ T.V. चेनल पर इस लिये ना'त पढ़ना (या बयान करना) के खूब शोहरत मिले, लोग रास्ते में रोक कर ईज़्ज़त से भिलें, अपने यहां महाफ़िल में मदूरी कर के आव भगत करें, मीडिया, या हुलां चेनल का मशहूरो मा'दृश ना'त ख्वां (या मुबालिग) कहें या ईश्तिहारात में लिखें, V.C.D जारी हो के जिस से खूब नाम चमके.

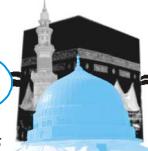
२० ना'त ख्वां (या मुबालिग) का शोहरत और वाह वाह ! के लिये c.d. या v.c.d जारी करवाना.

२१ बयान करते या सुनते हुए या हुआ करते या हुआ करवाते, या मुनाज़त या ना'त शरीफ पढ़ते या सुनते हुए ईस लिये रोने जैसी आवाज निकालना, रोनी सूरत बनाना, आंधे पट-पटा कर या ऊर से भीय कर ऊबर दस्ती आंसू छलकाना या बार बार आंधे पौंछना के लोग ईस की तरफ मु-तवज्ज्ञेह हों और ईसे ब निगाहे तहसीन (यानी तारीफ़ी नज़र से) देखें.

२२ ईज़्जिमाए जिको ना'त में ईस लिये आगे आगे बैठना, ना'तें सुन कर खूब झूमना, बुलन्द आवाज से वाह वाह ! سُبْحَنَ اللَّهِ كَبَرْना, ना'रे लगाना के लोग आशिके रसूल समझें.

२३ मुनाज़त या ना'त शरीफ सुन कर यीझो पुकार और उछल कूद कर के हाजिरीन की तवज्ज्ञेह चाहना, अगर रिक्कत तारी हो गई थी और जोश में खड़ा हो गया था, मगर अब केफ़ियत से बाहर आ जाने के बा वुजूद ईस लिये खड़े खड़े हाथ पैर हिलाने का सिल्लिला जारी रखना के लोग येह न कह सकें के अरे ईतनी ज़ल्दी येह नॉर्मल हो गया ! या ईस लिये जमीन पर गिरना तड़पना के लोग पकड़े सहलाएं, होश में लाने के लिये जतन करें, पानी पिलाएं और येह “हू हू” करता हुवा आहिस्ता आहिस्ता होश में आने का अन्दाज ईजियार करे और यूं लोगों की नज़र में खुद को उशाक में खपा ले.





इसमाने मूस्तकः مُوْسَلِكٌ : تُوْمُ جَاهَانْ بी हो मुज पर हुरूद पढो के तुम्हारा हुरूद मुज तक पहोंचता है. (بخاری)

﴿14﴾ ना'त वगैरा सुन कर इस लिये फ़िराके मदीना में आहें भरना बार बार मदीना मदीना कहना ताके लोग “मदीने का दीवाना” समजें.

﴿15﴾ ईज्ञिमाए जिको ना'त में सिई बिरयानी या खियडा वगैरा खाने के लिये शिर्कत करना।

﴿16﴾ मुनाज़त, ना'त व मन्कबत वगैरा लिखने वाले का इस के मक्तब में अपना तखल्लुस इस लिये डालना के नेक नामी हो, दाद भिले, लोगों पर छाप पडे के वाह भई वाह ! येह तो बहुत अच्छा शाईर है.

राहे खुदा में खर्च करने वालों के लिये रियाकारी की 3 भिसालें

﴿1﴾ दीनी कामों में इस लिये चन्दा देना के लोग सभी कहें.

﴿2﴾ इस लिये गरीबों में जैरात बांटना के वोह इस के गिर्द हाज़ साहिब ! सोठ साहिब ! कह कर हुजूम करें, इस की भिन्नत समाजत करें, इस के सामने गिर-गिराओं.

﴿3﴾ मरीजों, दुष्यारों और सैलाब झदों वगैरा की खिदमत के लिये इस लिये भागदौड़ करे के लोग मुसीबत झदों का जैर ख्वाह या बेहतरीन समाज कारकुन कहें.

रियाकारी के मु-तअल्लिक मु-तफ्फरक 32 भिसालें

﴿1﴾ इन्हे किराअत इस लिये सीधना के लोग “कारी साहिब” कहें.

﴿2﴾ कारी साहिब का ईज्ञिमाआत में हाजिरीन की भिकदार के मुताबिक (और ईमाम साहिब का जहरी नमाजों में मुक्तादियों की किल्लत व कसरत को मद्देनज़र रखते हुए) तज़वीद के कवाईद की रिआयत और आवाज के उतार चढाव में कभी बेशी करने से मक्सूद हाजिरीन की खुशनूदी हो. (काश ! अल्लाह جल ج़्ल की रिज़ा के लिये सिर्फ़ नमाजों में भी हरभे झड़त तज़वीद के कवाईद की रिआयत की आदत बने)

﴿3﴾ अपने लिये आजिजी के अद्वाज म-सलन फ़कीर, गुनहगार, नाकारा वगैरा इस लिये बोलना या लिखना के लोग मुन्कसिल भिजाज समजें, आजिजी की



इसमाने मूस्तका ملِ اللہ تعالیٰ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा हुड्डे पाक पढ़ा अल्लाह उर्जुरूजुरू (उस पर सो रहमत नाजिल फरमाता है। (بِنْ))

ता'रीफ करें। (दिल की ताईद के बिगैर अपने लिये ऐसे अल्लाज की अदाएँगी मुना-ह-कत भी हैं)

4 लोगों से इस लिये पुर तपाक तरीके से भिलना के भिलन-सार और बा अप्लाक कहलाए।

5 हुआ वजौरा में सब के सामने रोना आ जाए तो इस लिये आंसू पोंछते रहना के लोगों पर येह तअस्सुर काईम हो के येह रियाकारी से बचने के लिये जल्दी जल्दी आंसू पोंछ लेता है।

6 लोगों के दिलों में जगह बनाने के लिये इस तरह के जुम्ले कहना : मुझे गुनाहों से बड़ा उर लगता है, मुझे बुरे खातिमे का खौफ रहता है, हाए ! अंधेरी कब्र में क्या होगा ! आह ! डियामत में हिसाब कैसे हूँगा !

7 लोगों पर अपनी हुन्या से ला तअल्लुकी और पारसाई की छाप डालने के लिये कहना : मैं तो भालदारों और शाज्जिय्यात से भिलने से बचता हूँ (अगर येह फ़िकरा भालदार वजौरा को अपने से हकीर समझ कर कह रहा है तो तक्बुर की आश्त में भी इसा)

8 किसी की मुसीबत का सुन कर इस लिये मुंह बनाना या हम दर्दना जुम्ले कहना के लोग रहम दिल कहें। (अलबत्ता हुभियारे मुसल्मान की दिलजूही की नियत से रिजाए इलाही के लिये उस के सामने ऐसा करना इबादत और बाईसे सवाबे आभिरत है)

9 हाथ में इस लिये तरबीह रखना, और नुमायां करना, या लोगों के सामने इस लिये होंट छिला छिला कर या उन्हें आवाज पहोंचे इस तरह हुड्ड व अज्कार पढना के नेक समझा जाए।

10 जल्वत में (या'नी लोगों के सामने) खाते पीते, उठते बैठते वजौरा वजौरा मवाकेअ पर सुन्नतों का अच्छी तरह ख्याल रखना ताके लोग सुन्नतों पर अभल करने वाला करार है। (काश ! अकेले में भी खाने पीने और दीगर अफ्फाल में भूब सुन्नतें अपनाने का जेहन बन जाए)

11 दावत में या दूसरों की भौजू-दग्गी में इस लिये कम खाना के देखने वाले इसे मुतबेए सुन्नत (या'नी सुन्नत की पैरवी करने वाला) और कलीलुल गिज़ा (या'नी कम खाने वाला) तसव्युर करें। (अफ्सोस ! येह रियाकार जब घर में या बे तकल्लुफ दोस्तों के दरभियान हो



इसमाने मुस्तकः مُسْتَكٌ : جِسْ كے पास मेरा झिक हो और वोह मुझ पर हुक्म शरीक न पढ़े तो वोह लागों में से कन्जूस तरीन शाखा है। (ابن بزير)

तो दूसरों का हिस्सा भी यट कर जाए)

12) किसी को अपने नेक काम बता कर येह कहना के “आप किसी और को भत बताना.” ताके सामने वाला मु-तअस्सिर हो के बहुत मुज्जिस शाखा है के किसी पर अपना नेक अमल जाहिर नहीं करना चाहता।

13) अपने नाम के साथ हाफिज बोलने या लिखने का इस लिये ऐहतिमाम करना के लोग ब नजरे तड़सीन हेखें اللہ اَعْشَمْ बोलें, ऐहतिरामन हाफिज साहिब या हाफिज ज कहें, हुआओं की इल्लिजाएं करें। (अगर रिया की नियत न हो तो हाफिज का अपने मुंह से खुद को हाफिज बोलना लिखना मन्द नहीं)

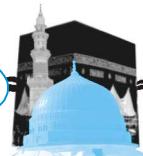
14) २-मजानुल मुबारक का ए'तिकाफ़ करना या सब के सामने इस लिये तिलावत करना, या खूब गिर्गिड़ा कर हुआओं मांगना के लोग नेक आदभी समझें।

15) २-मजानुल मुबारक का इस लिये ए'तिकाफ़ करना के मुफ्त में स-हरी और ईफ्तारी की तरकीब बन जाए।

16) मौत मध्यित के भौकअ पर भागदौड़ करना नीज़ जनाजे के जुलूस और तद्दीन वगैरा में आगे आगे रहना ताके लोगों में नुमायां हो, अहले मध्यित मु-तअस्सिर हों, उन की नजर में अच्छा इन्सान बने।

17) नेक कामों में खूब बढ़ यढ़ कर हिस्सा लेना ताके लोग नेकियों का हरीस समझें।

18) अपने दीनी कारनामे इस लिये बयान करना के सुनने वाले इसे दीन का बहुत बड़ा खादिम तसव्वुर करें और इस की अ-ज़-मतों के भो'तरिफ़ हों। म-सलन अपने फ़जाईल का काईल करने के लिये यूं कहना : मुझे तो 15 साल हो गए नेत्री की दा'वत आम करते हुए, मैं इतने अर्से तक दा'वते इस्लामी की कुलां कुलां जिम्मेदारी पर फ़ाઈज रहा, मैं ने इतने अलाकों बढ़के मुल्कों में जा कर म-दनी काम किया, मैं ने सेंकड़ों की दाढ़ी रखवाई, इमामे सजवाए, म-दनी काम करने पर आमादा किया, उन की तरबियत की, कुलां कुलां जिम्मेदारान को भी मैं म-दनी माहोल में लाया हूं वगैरा।



کرمانے مुسٹاک (۳) : صلی اللہ تعالیٰ علیہ وَا سَلَّمَ

- ﴿19﴾ مُوتا-لાએ કે દૌરાન કોઈ હિકમત ભરા ઉમદા મ-દની ફૂલ મિલ ગયા તો દૂસરોં સે પોશીદા રખ કર બેઠે ઈજાતિમાં મેં ઈસ લિયે બયાન કરના તાકે વાહ વાહ سُبْحَنَ اللَّهِ કા શોર હો, કસીર અફરાદ પર અપની કસરતે મા'લૂમાત કા સિક્કા બેઠે ઔર તા'રીફ હો.

﴿20﴾ અપની ફી સબીલિલ્હાહ ઈમામત યા દીની તદરીસ કા ઈસ લિયે દૂસરોં સે તજકિરા કરના કે લોગ ઈસ સે મુ-તઅસ્સિર હોં, કદ્ર કી નિગાહ સે દેખેં.

﴿21﴾ બડી રાત યા ઈજાતિમાઆત વગેરા મેં ઈસ લિયે ખૂબ લહજે કે સાથ અગ્રાન દેના કે લોગ આવાજ વ અન્દાજ કી વાહ વાહ કરેં.

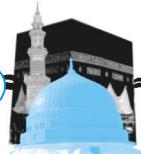
﴿22﴾ ખરીદારી કરતે વકત યા ઉજરત પર કિસી સે કોઈ કામ કરવાતે વકત અપને દીની મન્સબ મ-સલન દીની તાલિબે ઈલ્મ યા હાફિઝે કુરાઓન યા ઈમામે મસ્જિદ યા મુઅઝિઝન યા મુબલિગ વગેરા હોને કા ઈસ લિયે ઈજહાર કરના કે વોહ રિઆયત કર દે યા ફિર પૈસે હી ન લે.

﴿23﴾ કિતાબ યા રિસાલા લિખતે વકત ઈસ નિયત સે ઈબ્રત અંગેજ રિવાયાત વ ખૂબ દિલચ્સ્પ હિકાયાત ઔર ઉમદા ઉમદા મ-દની ફૂલ શામિલ કરના કે પઢને વાલે દાદો તહ્ખ્સીન દેને પર મજબૂર હો જાએં.

﴿24﴾ અપને હજ વ ઉમ્રે કી તા'દાદ, તિલાવતે કુરાઓ યૌમિયા મિકદાર, 2-જબુલ મુરજજબ વ શા'બાનુલ મુઅજ્જામ કે મુકમ્મલ ઔર દીગર નફલી રોજોં, નવાફિલ, દુરુદ શરીફ કી કસરત વગેરા કા ઈસ લિયે ઈજહાર કરના કે વાહ વાહ હો ઔર લોગોં કે દિલોં મેં એહતિરામ પૈદા હો.

﴿25﴾ છોટી બડી દીની કિતાબોં કે નામોં કે સાથ યા બિગેર નામ બતાએ અપને કસરતે મુતા-લાએ કા ઈજહાર કરના તાકે ઈસ્લામી ભાઈ ઈલ્મે દીન કા શૈદાઈ સમજેં, દૂસરોં કો ઈસ કી મિસાલ દેં.

﴿26﴾ ઈસ લિયે હજ કરના યા અપને હજ કા ઈજહાર કરના કે લોગ હાજી કહેં, મુલાકાત કે લિયે હાજિર હોં, જિડગિડ કર દુઆઓં કી ઈલ્લિજાઓં કરેં, ગજરા પહુનાએં, તહાઈફ વગેરા પેશ કરેં. (અગર અપની ઈજ્જુઝત કરવાના યા તોહફે વગેરા હાસિલ કરના મકસૂદ ન હો બલ્કે તહ્ખ્દીસે



इसमाने मुस्तकः مُسْتَكٌ : جِلْلَهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार हुड़े पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (بِالْحَمْدُ لِلَّهِ)

ने'मत वगैरा अच्छी अच्छी नियतें हों तो हज व उम्रे का ईजहार करने अजीजों और रिश्तेदारों को जम्मा करने, "महफिले मदीना" सजाने की मुमा-न-अत नहीं बल्के कारे सवाबे आधिरत हैं)

﴿27﴾ सादाते किराम का ईस लिये एहतिराम बजा लाए, इस्त बोसी वगैरा करे के सच्चिदों के हिलों में ईज़्ज़त पैदा हो या लोग मुहिले अहले बैत कहें।

﴿28﴾ मज़ारात की ईस लिये ब कसरत ज़ियारतें करे, हर जगह उसीं में पेश पेश रहे के लोग औलियाएँ किराम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ رَحْمَةً اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ اَنَّمَا سَلَامٌ का आशिक कहें।

﴿29﴾ सरकारे गौसे आ'ऱ्म كَرَم اللَّهُ الْأَكْرَم كَرَم اللَّهُ الرَّحْمَةُ الرَّحِيمُ का ईस लिये बार बार तज़किरा करे या ज्यारहवीं शरीक की नियाज करे या आप की मन्कबत में खूब जूमे के लोग गौसे पाक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ دीवाना सभजें।

﴿30﴾ अपने पीर की ईस लिये खूब भिट्ठत करे, लोगों के सामने इन भिट्ठात का तज़किरा करे, उन के करीब नज़र आए ताके ईसे लोग अपने मुर्शिद का मुकर्ब, मन्जूरे नज़र और खादिमे खास सभजें, ईज़्ज़त करें, हाथ चूमें, नुमायां जगह पर भिट्ठाएं, हुआओं की ईन्तिजाएं करें, तोहङे नज़राने पेश करें, पीर साहिब के लिये सिफारिशी बनाएं।

﴿31﴾ पीरो मुर्शिद की बची हुई चीज़ दूसरों की भौजू-दग्गी में ईस लिये झटपट खाए के लोग "तबरुक का हरीस" तसव्वुर करें। (और अगर कोई देखता न हो तो तबरुक को हाथ भी न लगाए या दूसरों की तरफ सरका दे)

﴿32﴾ दूसरों की भौजू-दग्गी में ईस लिये चुपचाप रहना या ईशारे से या लिख कर गुफ्त-गू करना के लोग सन्तुष्टा, खामोश तभीअत और जबान का कुँफ़ले मदीना लगाने वाला तसव्वुर करें। (ख्वाह घर में और बे तकल्बु़ दोस्तों में खूब कछक्के लगाता और शेरे बबर की तरह दहड़ता या'नी चीखता हो)



फरमाने मुस्तकः ﴿كَمَنْ يَرِيَنِي إِنِّي أَعْلَمُ بِمَا أَنْهَا كُلُّ نَعْصَمٍ﴾ : مुज़ ५२ हुरूद शरीक पढो अल्लाह उल्लिख तुम पर २७ मत भेजेगा। (ابن مسी)



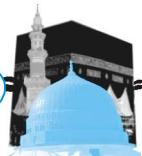
रिया की ता'रीफ के तहत मज़कूरा मिसालों पर गौर लीजिये : भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! मज़कूरा मिसालों को झेड़न में रघते हुए रियाकारी की ता'रीफ पर एक बार फिर नज़र डाल लीजिये जैसा के बहारे शरीअत जिल्ह ३ सफ्हा ६२९ पर है : “रिया या’नी दिखावे के लिये (नेक) काम करना और “सुम्मा” या’नी ईस लिये (नेक) काम करना के लोग सुनेंगे और अच्छा जानेंगे, ये हैं दोनों चीजें बहुत बुरी हैं, इन की वजह से ईबादत का सवाब नहीं मिलता बल्कि गुनाह होता है और ये हैं शाखे मुस्तहिके अजाब होता है.” रियाकारी की ता'रीफ में ये हैं भी शामिल हैं के लोगों पर अपनी ईबादत गुजारी की धाक बिठाना, अपनी ता'रीफ, वाह वाह और ईज़्ज़त चाहना या उस नेक काम से सूटपीस, या रकम का लिफ़ाझ़ा या खाना या मिठाई या किसी किस्म के नज़राने का हुसूल मक्सूद होना. नीज़ पेश कर्दा मिसालों में “हुज्जे जाह” या’नी “ईज़्ज़त व शोहरत की महज्जत” भी मौजूद है. क्यूंके रियाकारी का एक बहुत बड़ा सबब “हुज्जे जाह” है.

रियाकारी की मिसालों के बारे में एक अऱ्ही काहत : याद रहे ! रियाकारी की ये हैं तमाम मिसालें पढ़ने सुनने वाले के अपने आप में रियाकारी तलाश करने के लिये हैं, किसी दूसरे को रियाकार करार देने के लिये नहीं क्यूंके रियाकारी का तअल्लुक दिल से है और किसी के दिल के हालात पर हर कोई भुतलअ नहीं हो सकता. लिहाज़ा ईन मिसालों पर कियास करते हुए किसी मुसल्मान पर बद गुमानी न की जाए, बद गुमानी हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है और ईसी तरह किसी के बारे में तज्जस्सुस (या’नी गुनाह की तलाश) करना, उस की पर्दा दरी करना (या’नी ऐब खोलना) और उस में ये हैं (या’नी रियाकारी की) अलामात तलाश करना ताके उस को बदनाम किया जाए ये हैं भी हराम हैं.



भूद को रियाकारी के अजाब से डराए ! : बराए करम ! अपनी नेकियों को टटोलिये के कहीं ईस में रिया तो छुपी हुई नहीं ! क्यूंके रिया अऱ्टी की चाल से भी बारीक चाल के अरीए अ-मले घेर में दाखिल हो जाती है, हकीकत ये है कि “रिया” में जो “लज़्ज़त” है वो है न उम्दा गिजाओं में है न ही





ریاکار کی احوالات

15

مدائیں تعلیم
مُوناپرہن

مککت علیم
مُوکرہن

فرمائے مُسْتَكْفٰ : مُعَذٰ پر کسرت سے ہوئے پاک پڑے بے شک تُمَّا رَا مُعَذٰ پر ہوئے پاک
پڑنا تُمَّا رے گُنَّاہوں کے لیے مُجْزِیَّت ہے۔ (بخاری)

مال و دللت کی کسرت میں، اس سے بخنا بھوت بھوت جزوی ہے کہ یہ ”لکھنات“
جہنم میں پہنچانے والی ہے لیکن اگر اپنے کسی نہ کام میں ریا کا شاید بآ
(یا نہ شک) بھی پائے تو توبہ کرے اور اپنے آپ کو ڈراہوں کے فرمائے مُسْتَكْفٰ
سو مرتبا پناہ مانگتا ہے، اخلاع عزوجل نے یہ وادی عزمتے مُعاشرہ عزوجل
عزمتے مُعاشرہ عزوجل کے عزوجل کے در کے ہائل اور راہ بودا عزوجل
میں نیکلنے والے ہوں گے۔“ (الْمُفْجُمُ الْكَبِيرُ ص ۱۳۶ حديث ۱۲۸۰۲) اگر کوئی اسلامی
اسلامی بہن بود میں مذکورا میساں میں سے کوئی میساں پائے تو لائم ریاکاری
کا ہلکا جکر بھاگر یہ نہ ہو کہ اسلام نہ کیوں اور سआشت ماندیوں ہی کو چوڑ دے کیونکے
ناک پر مجبھی بیٹ جائے تو مجبھی کو ڈالا جاتا ہے ناک نہیں کاٹی جاتی۔

بچا لے ریا سے بچا یا ہلکا

تُو ہلکا س کر دے اتنا یا ہلکا

امین بجاۃ النبی الامین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم

(تکمیلی مالامات کے لیے مکتوب محدثین کی متابو ا 166 سلفات پر مُشریف کتاب
”ریاکاری“ کا ممتاز لام فرمائیے)

صلوٰعَلَى الْحَبِيبِ ! صلی اللہ تعالیٰ علی مُحَمَّدٍ

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ ! أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ

صلوٰعَلَى الْحَبِيبِ ! صلی اللہ تعالیٰ علی مُحَمَّدٍ

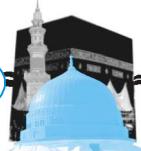
ریاکار کی احوالات : ابھی رل مُعَمِّنیں ہجارتے مولائے کا انہات، ادیشیں
مُرتزا شریعت بودا نے گُرَمُ اللہ تعالیٰ وجہِ الکریم ماری فرمائیا : ریاکار کی تین احوالات میں ہیں :

مدائیں تعلیم
مُوناپرہن

جَنَانُتُول
بَارِكَارا

مدائیں تعلیم
مُوناپرہن

مککت علیم
مُوکرہن



કરમાને મુસટફા ઉદ્ઘાત કરી રહ્યા હતા એવું હશે જો મુજબ પર એક હૃદય શરીર પદ્ધતા હૈ અથવા હું એક વિભાગીય વિભાગ કરી રહ્યા હતા એવું હશે જો એક કીરત ઉલ્લંઘન પણ નથી (عابرات). (جتنانہ)

﴿1﴾ تਨਾਈ ਮੇਂ ਛੋ ਤੋ ਅਮਲ ਮੇਂ ਸੁਸ਼ਟੀ ਕਰੇ ਔਰ ਲੋਗਾਂ ਕੇ ਸਾਮਨੇ ਛੋ ਤੋ ਚੁਸ਼ਟੀ ਦਿੱਖਾਏ
 ﴿2﴾ ਤਾ’ਰੀਫ ਕੀ ਜਾਏ ਤੋ ਅਮਲ ਮੇਂ ਈਝਾਫ਼ਾ ਕਰ ਦੇ ਔਰ ﴿3﴾ ਮੜਮਤ ਕੀ ਜਾਏ ਤੋ ਅਮਲ
 ਮੇਂ ਕਮੀ ਕਰ ਦੇ। (الرَّوْا حُرُّ عَنِ الْأَقْتِرَافِ الْكَلَائِيرِجِ ص ٨٦)

(الرؤا جُرُ عن اقْتِرَافِ الْكَبَايْرِ ج ١ ص ٨٦)

लोगों में अपनी माझमत करना भी सिया की अलाभत है : हजरते सच्चिदना

خواجہ حسان بنساری علیہ رحمۃ اللہ القوی فرماتے ہیں : جو شاپس کیسی ماجماعت میں اپنی ماجمumat کرتا (یا' نی بुد کو گونۂ گار، بادکار، سیٹاٹ کار وغیرا کھلتا) ہے وہ دار ہکیکت اپنی تاریخ کرتا ہے (کے لئے اسے شاپس کو موتواجئے اور مونکسیل میجاو کھ کر اس کی آجیزی کی تاریخ کرتے ہیں) اور یہ بھی ریسا کی احوالات میں سے ایک احوالات ہے۔

(٢٤) صِفَاتُ الْمُغْتَرِّينَ

याद रहे ! अपने लिये आजिजी के अल्फाइ का 'ईस्टि'माल उस सूरत में रियाकारी है जब के रियाकारी की निष्पत हो और अब येह गुनाह है और ईसी तरह अगर सिर्फ़ अबान से आजिजी के अल्फाइ कह रहा हो और दिल में येह कैफ़ियत न हो तो मुना-फ़-कत है और येह भी गुनाह है.

ਰोज़े के बारे में न पूछो : हज़रते सच्चिदनाना ईश्वरालीभ बिन अदहम क्रम
उल्लीला^{رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَمُ} इरमाते हैं : अपने भाई से उस के रोज़े के बारे में न पूछो, क्यूंकि अगर वो उ कहता है के मैं रोजादार हूं तो उस का नफ्स खुश होगा और अगर कहे के मैं रोजादार नहीं हूं तो उस का नफ्स गमगीन होगा और ये ह दोनों रिया की अलामतों में से हैं.

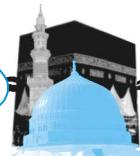
(٢٤) **(تنبیه المُغترِّین ص)**

(صَحِيفَةُ مُسْلِمٍ حَدِيثٌ، ص ١١٥، ٥٧٩)

مُعْذِّبَةُ الْحَنَانِ مُعْذِّبَةُ الْحَنَانِ
مُعْذِّبَةُ الْحَنَانِ مُعْذِّبَةُ الْحَنَانِ

મુફસ્સિસરે શહીર હકીમુલ ઉમ્મત હજરતે મુફ્તી અહમદ યાર ખાન એ હું હશે
ઈસ હદીસે પાક કે તહૃત ફરમાતે હોય : ખયાલ રહે કે નફલી રોજે કા છુપાના બેહતર હોય

મદીનતલ જુનાતલ મદીનતલ મક્કતલ



કરમાને મુસ્તકા | જિસ ને કિતાબ મેં મુજ પર હુક્મે પાક લિખા તો જબ તક મેરા નામ ઉસ મેં રહેગા કિરિશેન ઉસ કે લિયે ઈસ્તિજીકાર કરતો રહેંગે. (બ્રાહ્મ)

ਮਗਰ ਯੂਂਕੇ ਧਣਾਂ (ਮ-ਸਲਨ ਕਿਸੀ ਕੇ ਘਰ ਜਾਨਾ ਹੁਵਾ ਹੋ ਤੋ ਵਹਾਂ) ਛੁਪਾਨੇ ਦੇ ਯਾ ਸਾਡਿਅੇ ਖਾਨਾ ਕੇ ਇਲ ਮੌਂ ਅਦਾਵਤ ਪੈਦਾ ਹੋਗੀ ਯਾ ਰਨ੍ਝੇ ਗਮ, (ਜਿਆਏ ਇਲਾਹੀ ਕੀ ਨਿਧਤ ਦੇ) ਮੁਸਲਿਮਾਨ ਕੇ ਇਲ ਕੋ ਖੁਸ਼ ਕਰਨਾ ਭੀ ਇਕਾਦਤ ਹੈ ਇਸ ਲਿਧੇ ਰੋਜ਼ੇ ਕੇ ਇੱਕਥਾਰ ਕਾ ਹੁਕਮ ਦਿਯਾ ਗਿਆ।

(મિરઆતૂલ મનાજીહ, જી. 3, સ. 199)

નેકી કે સબબ ચીજોં સસ્તી મિલના :હારતે સચ્ચિદુના ઈમામ અહુમદ બિન હઝર

(الرواجر عن اقتراح الكبائر ج ١ ص ٩٣)

ਮੁਖਿਤਸੀਨ ਕਾ ਰਿਯਾ ਸੇ ਬਾਚਾਨੇ ਕਾ ਅਨਦਾਅ : ਮਝੀਏ ਫਰਮਾਤੇ ਹੋਣ : ਲਿਹਾਜਾ ਮੁਖਿਲਿਸ ਬਨਦੇ ਹਮੇਂ ਖੜੀ (ਯਾਨੀ ਪੋਥੀਵਾ) ਰਿਯਾ ਸੇ ਤਰਤੇ ਰਹਤੇ ਹੋਣ ਔਰ ਦੀਗਾਰ ਲੋਗ ਜਿਤਨੀ ਕੋਣਿਆ ਅਪਨੇ ਗੁਨਾਹ ਛੁਪਾਨੇ ਮੌਕੇ ਕਰਤੇ ਹੋਣ ਧੇਹ ਉਨ ਸੇ ਜਿਧਾਵਾ ਅਪਨੀ ਨੇਕਿਆਂ ਛੁਪਾਨੇ ਕੇ ਹਰੀਸ ਹੋਤੇ ਹੋਣ ਔਰ ਈਸ ਕੀ ਵਰਗ ਸਿੱਖ ਧੇਹ ਹੈ ਕੇ ਧੇਹ ਲੋਗ ਅਪਨੀ ਨੇਕਿਆਂ ਕੋ ਖਾਲਿਸ ਕਰਨਾ ਚਾਹਤੇ ਹੋਣ ਤਾਕੇ ਅਲਵਾਹ ਗੁੰਡੀ ਕਿਧਾਮਤ ਕੇ ਦਿਨ ਲੋਗਾਂ ਕੇ ਸਾਮਨੇ ਇਨ੍ਹੋਂ ਅਵਧ ਅਤਾ ਫਰਮਾਏ ਕਿਧੂਂਕੇ ਇਨ੍ਹੋਂ ਈਸ ਬਾਤ ਪਰ ਧਕੀਨ ਹੈ ਕੇ



۱۸ مہینے مُسُنّت فدا : مُنَّى اللہ تعالیٰ علیہ وَاللّٰہُ سَلَّمَ : جس نے مُعْجَز پر اُک بار ہُدود پاک پਥਾ ਅਲਵਾਹ ਉੱਤਰی (عَزَّ وَجَلَ) عَزَّ وَجَلَ (عَزَّ وَجَلَ) دਸ ۱۸ مہینے مُسُنّت فدا ہے۔ (۱۸)

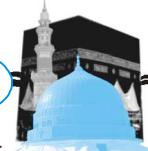
اللّٰہ تعالیٰ علیہ وَاللّٰہُ سَلَّمَ : سیفیں ووہی آਮال کبُول فرماتا ہے جو یحیا اس کے ساتھ کیے گئے ہوں اور ووہ یہ ہے بھی جانتے ہیں کہ کیا مات کے دین لوگ سپت مہینہ تا ۷ اور بُکہ ہوں گے اور ۷ ن کے مال و اُولاد ۷ نہ کوچ کام ن آئے گے سیوا اس کے، کہ جو اخلاق عَزَّ وَجَلَ کی بارگاہ میں کلبے سالیم (بآ'نی گوناہوں سے مکہ کوچ دیل) لے کر ہاجیز ہو گا۔

(أَرْوَاحُ عِنْ أَقْتِرَافِ الْكَبَائِرِ ج ۱ ص ۹۳)

صَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَوَاتُ اللّٰهِ عَلَى مُحَمَّدٍ

کہیں ہم ریاکار تو نہیں ؟ : میठے میठے یہ سلامی بآئیو ! ہم یہ چاہیے کہ دیyanat داری سے بُعد پر گوئر کرنے کے کہیں ہم تناہی میں یہ بادت کے مुਆ-ملے میں سُستی اور لوگوں کے سامنے یوں کہا جاؤ ہے تو نہیں کرتے ؟ کہیں ہم نہ کی کرنے کے بآ'د یہ س کا لوگوں پر بیلہ ڈزرت یہ ڈھار تو نہیں کر دیا کرتے ؟ فیکر اگر کوئی یہ س پر ہماری تا'ریخ کر دے تو ”کوکل کر“ املا میں یہ ڈھانہ تو نہیں کر دے ؟ اور تا'ریخ ن ہونے کی سُورت میں کہیں ہم گمگین تو نہیں ہو جاتے اور ہم املا میں کبھی تو نہیں آ جاتی ؟ کہیں ایسا تو نہیں کہ ہم لوگوں کے سامنے نہ کی کرنے میں بڑی لجڑت بیلتوی ہو مگر تناہی میں مجا ن آتا ہو ؟ کہیں ہم لوگوں کے سامنے (بُعد کو سیفاہ کا ر، گوناہگاہ، مُعْجَز، ڈکیر، ہکیر اور آجیز و بیسکین و گیرا کھ کر) اپنی ماجھمت اُنہے مُعْتَدِل اسی سر کرنے کے لیے تو نہیں کرتے ؟ ہم کہیں اپنے مُعْتَدِلیگ یا سُنّاتوں برے م-دھنی ہلکے گیرا سے فا اسے ڈھاتے ہوئے اپنے سے مُعْتَدِل اسی سر ہونے والے دُکان داروں سے یہ س لیے تو سوچا نہیں دیتے کہ ووہ ہم میں مُعْتَدِل میں یا سستے داموں دے ؟ اگر ۷ ن سُوچا لات کے جو باہات ہیں میں آجے تو فیکر سے پہلے توبہ کر لیجیے اور ہلکے یہ س کی کوششیوں میں لگ جائیے کہ کہیں ایسا ن ہو کہ توبہ سے پہلے موت آ جائے اور ریاکاری کے سبب دُکان دے گا جائے۔

ریاکاری سے توبہ کی ب-ر-کت : مُعْتَدِل اسی سر شاہی رہکی میں ہم اسے مُعْتَدِل اسی سر پار بخان عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْحَمْدُ لِلّٰہِ الْحَمْدُ لیجاتے ہیں : بخاں رہے کہ ریا سے یہ بادت نہ آئی اس نہیں



فَرَمَأَنَّهُ مُسْتَكْشِفًا : جَوَ شَابِسَ مُعَاذَ بْنَ رَوْدَةَ مَالِكَ بَنِ دَنَانَةَ كَوَافِرَةَ بَلْ غَيْرَهُ . (بُطْرُونِ)

ہو جاتی (یا' نی ایسا نہیں کے ریخاکاری سے نہایت پذیری تو (उसے تکن نہایت سمجھا جائے) بولکے نا مکبُول ہونے کا اندرشا ہوتا ہے اگر ریخاکار آبیحیر میں ریخا سے (سچی) توبہ کرے تو اس پر ریخا کی ہبادت کی کجا واجیب نہیں بولکے اس توبہ کی ب-ر-کت سے گوئشتا نا مکبُول ریخا کی ہبادت بھی کبُول ہو جائے گی۔ مُتْلَكَن ریخا سے بآلی ہونا بہت مُوشکل ہے کوئی شابس ریخا کے اندرش سے ہبادت نہ ہوئے بولکے ریخا سے بچانے کی ہوئی کرے۔

(بِرَأْيِ أَنَّهُ مَنَّا لَهُ، جِ. 7، ص. 127)

تَرَى رَدْمُو كَرَمَ پَرَ آسَ مِنْ نَبَّأْيَ رَبَّيَ لَهُ

بَدِيْ عَمَّيَادَ لَهُ آمَّا ! كَرَمَ رَوْزَهُ جَوَاهَرَهُ

(وَسَارَدَلَهُ بَحِيشَشَ، ص. 188)

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى مُحَمَّدٍ

م-رے ریخا کا ہلاؤ کیجیے : میڈے میڈے ہلاؤ سلامی بآہیو ! اگر ہم اپنے ہیل میں اس م-رے ریخا کی احوالماٹ مہسوس کرے تو بآہے توبہ ہلاؤ میں دے ر نہیں کرنا یا ہی۔ جب ہم اپنے باتین کو پاکیزا کرنے کی کوشش کرے گے تو ان شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ بَلَغَهُ مَارَأَ یَا ہی سُوْثَرَا ہو جائے گا۔ شاہنشاہ مُدِینَة، کراچی کلبوں سینا اہم اس کا فرمائے بڑا کریں ہے : “جو اپنے باتین کی ہلاؤ کرے گا تو اخلاع اس کے یا ہی (بھی) ہلاؤ عَزَّ وَجَلَّ فرمائے گا۔”

(الْجَامِعُ الصَّفِيرُ لِلْسُّيُوفِيِّ ص: ۸۰، حديث ۸۳۳۹)

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى مُحَمَّدٍ

“عَلَّا سَكَنُ ” کے دس ہر کی
نیزbat سے ریخاکاری کے 10 ہلاؤ

﴿1﴾ اخلاع تآلما سے ہوئا کے جریئے مدد تلبی کیجیے ﴿2﴾ ریخاکاری کے نुکساناں پر نظر رجیے ﴿3﴾ ریخا کے امراباب کا باتیما کیجیے ﴿4﴾ اپنے آمائل میں ہلاؤ سلام پیدا کیجیے ﴿5﴾ نیزت کی ہیفاہت کیجیے ﴿6﴾ دُورانے ہبادت شہستانی ورثوں سے بچیے



इरमाने मुस्तका : ﷺ : जिस के पास मेरा जिक हुआ और उस ने मुझ पर हुरें पाक न पढ़ा तड़कीक वाल बद बज्जत हो गया। (जैन)

﴿7﴾ तन्हाई हो या हुजूम यक्सां अमल कीजिये ﴿8﴾ नेकियां छुपाईये ﴿9﴾ सिर्फ अच्छी सोहबत में रहिये ﴿10﴾ अवरादो वजाईँ का मा'मूल बना लीजिये। अब इन मुआ-लज्जत की वजाहत मुला-हज्जा इरमाईये :

﴿पहला ईलाज﴾ अल्लाह तखाला से दुआ के गरीबे मद्द तबन दीजिये

इरमाने मुस्तका : ﷺ : इन दूसरों मुस्तकों का उल्लेख इसी शैतान के जिलाई जंग में ये हुए हथियार ईस्ति'माल करते हुए खुदाए गफ्फार के दरबारे करम बार में यूं हुआ कीजिये : या रज्जे मुस्तका ! मुझे रियाकारी की भीमारी से शिक्षा अता इरमा, मेरी खाली जोली ईध्लास की लाजवाल दौलत से भर दे। मेरा सामना उस हुश्मन (या'नी शैतान) से है जो मुझे देखता है मगर खुद दिखाई नहीं देता लेकिन तू उस को मुला-हज्जा इरमा रहा है, ऐ अल्लाह ! मुझे इस हुश्मन के मक्कों फरेब से बचा दे, ऐ अल्लाह ! मैं इस बात से तेरी पनाह चाहता हूं के लोगों की नज़र में तो मेरा हाल बहुत अच्छा हो, वोह मुझे नेक और परहेज गार समझते रहें मगर तेरे दरबार में सजा का हक्कदार ठहरूँ।

मेरा हर अमल बस तेरे वासिते हो
कर ईध्लास ऐसा अता या ईलाही

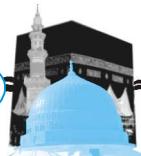
(वसाईले बिशाश, स. 78)

امين بجاه النبي الامين صل الله تعالى عليه وآله وسلام

صلوا على الحبيب ! صل الله تعالى على محمد

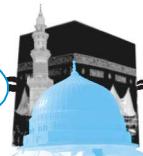
﴿दूसरा ईलाज﴾ रियाकारी के नुकसानात पेशे नम्र रजिये

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो ! हमें याहिये के रियाकारी की आफात और इस के नुकसानात अपने पेशे नज़र रखें क्यूंके आदमी का दिल किसी चीज को उस वक्त तक ही पसन्द करता है जब तक वोह उसे नहीं बद्ध नज़र आती है मगर जब उस शै



इसमाने मुस्तकः مُصْلَمٌ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالَّلَّهُ أَكْبَرُ : जिस ने मुज़ पर एक बार हुक्में पाक पढ़ा अल्लाह उर्जुल उस पर दस रहमतें भजता है। (۱)

के नुकसान देह होने का पता चलता है तो वोह उस से बचता है म-सलन किसी ईस्लामी भाई को लग्ज़त और भिठास की वजह से शहूद बहुत पसन्द हो लेकिन अगर उसे येह बता दिया जाए के येह शहूद जिसे तुम पीने जा रहे हो, इस में झड़र भिला हुवा है तो वोह उस में मौजूद लग्ज़त व भिठास नहीं झड़र को देखेगा और उसे हरगिज़ हरगिज़ नहीं पियेगा। इसी तरह लोगों पर अपना नेक अमल आहिर करने और उन की तरफ से वाह वाह होने में यकीनन नफ्स को बड़ी लग्ज़त भिलती है बल्कि उस लग्ज़त के सबब ईबादत की मशक्कत भी आसान हो जाती है, लेकिन हम इस लग्ज़त के बजाए रियाकारी के जरीए होने वाले झड़र से भी भतरनाक नुकसानात झेहन में रखें तो इस से बचना हमारे लिये कठरे आसान हो जाएगा क्यूंकि झड़र का नुकसान सिर्फ हुन्या की हृदय तक है जब के “रिया” आभिरत के लिये तबाह कर है। क्या रियाकारी का येही नुकसान कुछ कम है के नेक अमल में मशक्कत उठाने के बा वुजूद सवाब से महरुमी रहे ! उस मज़दूर का क्या हाल होगा जो सारा दिन धूप में पसीना बहाए और जब मज़दूरी भिलने का वक्त आए तो उस की मज़दूरी येह कह कर रोक ली जाए के तुम ने हुलां हुलां ग-लती की है इस लिये तुम्हें मज़दूरी नहीं भिलेगी। मगर आह ! रियाकार तो सवाब से महरुमी के साथ साथ अजाबे नार का भी हक्कार है, वोह ईन्सान कितना नादान है के जिस शै से वोह लाखों कमा सकता है उसे सिर्फ वक्ती खुशी की खातिर मुझ्फ़त के दामों बेच दे, बिल्कुल ईसी तरह वोह ईबादत गुजार कितना ना समझ है जो ईबादत के जरीए खालिक ग़ुर्ज़ूज़ का कुर्ब चाहने के बजाए मध्लूक को अपना बनाने की कोशिश करे, ऐसे रियाकार ने गोया अल्लाह ग़ुर्ज़ूज़ की ना फरमानी गवारा कर ली और इस के बदले लोगों से उन की महज्जत चाही, अल्लाह ग़ुर्ज़ूज़ की बारगाह से होने वाली मज़म्मत के बदले लोगों की भिद्धत (या'नी ता'रीफ) का तालिब हुवा, अल्लाह ग़ुर्ज़ूज़ की नाराज़ी के बदले लोगों की रिग़ा व खुशनूटी तलब की और बाकी रहने वाली जन्नती ने भर्ते फ़ानी हुन्या के बदले बेच डाली ! किंर सब लोगों को राजी रखना दूध की नहर खोदने के मु-तराहिफ़ है के अगर कुछ लोग एक बात से खुश होते हैं तो उसी बात से नाराज़ होने वालों की भी एक ताँदां होती है।



કરમાને મુશ્ટકફા : ﷺ શખ્સ મુજ્જ પર હૃતુદે પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્નત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (طباطبી)

ਅਤਾ ਕਰ ਦੇ ਇੱਖਲਾਸ ਕੀ ਮੁੜ ਕੋ ਨੇ'ਮਤ

ન નજીદીક આએ રિયા યા ઈલાહી

(વસાઈલે બિન્દિશા, સ. 77)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ਇਖਾਵੇ ਕੇ ਲਿਧੇ ਅਮਲ ਕਰਨੇ ਵਾਲੇ ਕੀ ਮਿਸਾਲ : ਲੋਗਾਂ ਕੇ ਇਖਾਨੇ ਔਰ੍ਹ ਸੁਨਾਨੇ ਕੇ ਲਿਧੇ ਅਮਲ ਕਰਨੇ ਵਾਲੇ ਕੀ ਮਿਸਾਲ ਉਸ ਸ਼ਾਬਦ ਕੀ ਤਰਫ਼ ਹੈ ਜੋ ਅਪਨੀ ਜੇਬ ਮੌਜੂਦ ਕੁਕੜਿਆਂ ਭਰ ਕਰ ਉਸੇ ਨੁਮਾਯਾਂ ਕਰਤੇ ਪਰੀਵਾਰੀ ਕੇ ਲਿਧੇ ਬਾਜ਼ਾਰ ਚਲਾ ਗਿਆ, ਜਥੇ ਲੋਗਾਂ ਨੇ ਉਸ ਕੀ ਉਭਰੀ ਹੁਈ ਜੇਬ ਫੱਖੀ ਤੋਂ ਛੇਰਤ ਸੇ ਕਿਛੁਨੇ ਲਗੇ : “ਵਾਹ ਭਈ ! ਫੱਖੋ ਤੋਂ ਸਹੀ ! ਇਸ ਕੀ ਜੇਬ ਕਿਸ ਕਦਰ ਰਕਮ ਸੇ ਭਰੀ ਹੁਈ ਹੈ !” ਮਹਾਰ ਉਸੇ ਲੋਗਾਂ ਕੀ ਇਹ ਵਾਹ ਵਾਹ ਕੇ ਇਲਾਵਾ ਕੋਈ ਝਾਅੰਦਾ ਨਹੀਂ ਮਿਲੇਗਾ ਕਿਉਂਕੇ ਵੋਹ ਜੂਂ ਹੀ ਹੁਕਾਨ ਦਾਰ ਕੋ ਦਾਮ ਅਦਾ ਕਰਨੇ ਕੇ ਲਿਧੇ ਅਪਨੀ ਜੇਬ ਸੇ ਰਕਮ ਕੇ ਬਦਲੇ ਪਥਰ ਨਿਕਾਲੇਗਾ, ਜਲੀਲੀ ਰੁਖਵਾ ਛੋ ਜਾਅੰਗਾ। ਇਸੀ ਤਰਫ਼ ਇਖਾਨੇ ਔਰ੍ਹ ਸੁਨਾਨੇ ਕੇ ਲਿਧੇ ਅਮਲ ਕਰਨੇ ਵਾਲੇ ਰਿਧਾਕਾਰ ਕੋ ਲੋਗਾਂ ਕੀ ਤਰਫ਼ ਸੇ ਬੋਲੇ ਜਾਨੇ ਵਾਲੇ ਤਾ'ਰੀਝੀ ਕਲਿਮਾਤ ਕੇ ਇਲਾਵਾ ਕੋਈ ਨਫ਼ਅ ਛਾਸਿਲ ਨਹੀਂ ਹੋਗਾ ਔਰ੍ਹ ਨ ਹੀ ਉਸੇ ਕਿਧਾਮਤ ਕੇ ਵਿਨ ਕੋਈ ਸਵਾਬ ਮਿਲੇਗਾ।

(الرواجر عن اقتراح الكبائر ج ١ ص ٨٦ بتصرف)

ਬਡੀ ਕੋਸ਼ਿਅਤੋਂ ਕੀ ਗੁਨਹ ਛੋਡਨੇ ਕੀ

રહે આહ ! નાકામ હમ યા ઈલાહી

(વસ્તાઈલે બપ્પિશાશ. સ. 82)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿تیسرا ہلکا﴾ ریya کے امربाब کا खातिमा कीजिये

મીઠે મીઠે ઈસ્ત્વામી ભાઈયો ! હર બીમારી કા કોઈ ન કોઈ સબબ હોતા હૈ અગર સબબ મિટા દિયા જાએ તો બીમારી ભી રૂખ્સત હો જાતી હૈ. ઈસી તરફ રિયાકારી કે ભી બુન્ધાઈ તૌર પર તીન અસ્થાબ હું. અગર ઈન તીન ચીજોંને જાન છડા લી જાએ તો

ریयا کاری سے بھانہ بے حد آسائیں ہو جائے گا۔ وہ تین اس باب
یہ ہے : (1) ہبھے جاہ یا' نی شوہر کی بھائیش (2) ماجھ مات کا بھوک اور (3)
ماں و دللت کی لیس۔

﴿1﴾ شوہرتوں کی حواسی : ہुبھے جاہ کی تاریخ ہے، ”شوہرتوں کو ہر جگہ ملکیت کرنے کا حواسی کرننا۔“ ہुبھے جاہ کی ملکیت کرتے ہوئے ہو جاتے ہوں جو توہینی ملکیت کے لئے ملکیت کی دلخواہ کرنے والی فرمائے ہوں : شوہرتوں کا مکساد لوگوں کے دلخواہ میں مکام بناانا ہے اور یہ حواسی ہر فرمائے کی ۴۳ ہے۔ ہم میں یا ہمیں کے ”ہو جاہ“ یا نبی شوہرتوں کی حواسی پر کابو پانے کے لیے احادیث میں مولانا-رکا میں وارد ہس کے نوکسانا نات پر گاؤ رہیں کر دیں، یعنی اس جیسے میں یا رہیں فرمائیں مولانا-ہنزا کی تاریخ کو بندھوں کی ترکی سے کی جانے والی تاریخ کی ملکیت سے میلانے سے بچتا رہو، کہیں تو ملکیت آماں مال برخواہ نہ ہو جائے (فردوس الاخبار للدبلیج ص ۲۲۳ حدیث ۱۵۶۷) **﴿2﴾ مال** اور مرتبا کی ملکیت میں مونا-فکت کو ہس ترکی بداشتی ہے جسے پانی سبھا ٹھپاتا ہے (۳۴۰۰۸۶ حدیث ۳ احیاء العلوم ص ۳) **﴿3﴾** دو بھوکے بڑیوں کے رہوں میں ہتھی تباہی نہیں ملکیت میں جتنا تباہی ہو جائے مال و جاہ (یا نبی مال و دلخواہ اور ہر جگہ ملکیت و شوہرتوں کی ملکیت) میں ملکیت کے دین میں ملکیت ہے (۱۶۶ حدیث ۲۲۸۳ قرآنی) **﴿4﴾** اپنی تاریخ پس انداز کرنے آئیں کو انداز بھرا کر دےتا ہے۔

(فردوس الاخبار للديلمي ج ١ ص ٣٤٧ حديث ٢٥٤٨)

યું ફિકે મદીના કીજિયે : કોશિશ કર કે ઈસ તરફ ગૌરો ખૌજ (ફિકે મદીના) કીજિયે : લોગોં કા મેરી તા'રીફ મેં ચન્દ જુમ્લે બોલ દેના યા મુજે તા'રીફી નિગાહોં સે દેખના, યા શોહરત ભિલ જાના નફ્સ કે લિયે યકીનન બાઈસે લગ્જૂઝત હૈ મગર લોગોં કી તરફ સે કી જાને વાલી તા'રીફ મુજે બરોજે હશે બારગાહે ઈલાહી ગુરૂજી મેં કામ્યાબી વ કામરાની નહીં દિલવા સકતી કયુંકે યેહ તા'રીફેં કરને વાલે લોગ તો ખુદ ખૌફે ઈતાબ સે લરજા બર અન્દામ હોંગે.



۲۲ مہینے مُوسَتَدَّا : جس نے مُعْجَ پر دس مَرَتَبَا سُبْحَ اور دس مَرَتَبَا شَامَ حُدُودَ پاک پڑا (عَزَّ وَجَلَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَ) (بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ) (عَزَّ وَجَلَ)

این کے تا’ریخ کرنے سے ن میرا ریڑھ بਛੇگا۔ ن عِمَّ میں یُؤْمِنَہ ہوگا اور ن ہی آبھیرت میں کوئی مکام و مرتبا نہیں ہو سکے گا، لیہا جا ائے لوگوں کی تاریخ سے کی جانے والی تا’ریخ کی چھاہیش کا کیا فایدہ! میں کیون یہن لوگوں کو ہدیہ نہ کے لیے نہ کہ املا کرے بلکہ میں سیف اپنے رَبِّ عَزَّ وَجَلَ کی ریڑھ کے لیے یہ بادت کر دے گا۔

اپنی یُؤْمِنَہ تا’ریخ پسند کرننا ہرام ہے : یہ مامے اہلے سُنَّتِ آپُوا
ہجرت مولانا شاہ احمد رضا خاں عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ عَزَّ وَجَلَ ایتھا ۲-احیا ۲۱
سال ۵۹۷ پر لیجاتے ہیں : اگر (کوئی آدھی) اپنی یُؤْمِنَہ تا’ریخ کو دوست رکھے (آپُوں
پسند کرے) کے لیے اس کی سنا (آپُوں تا’ریخ) کرے جو (فیصلت و بُوچی)
یہ س میں نہیں، جب تو سریع ہرامے کر دے گے۔ قَلَ اللَّهُ أَكْبَرُ (آپُوں ایلہا ہتھا لے ہراما)

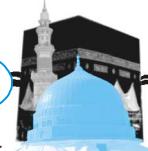
لَا تَحْسِبَنَ الَّذِينَ يَفْرُطُونَ بِهَا أَتَوْ
وَيَحْجُونَ أَنَّ يَحْمِدُوا إِلَيْهِمْ يَقُلُّوا فَلَا
تَحْسِنُهُمْ بِمِقَارَنَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ وَلَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ (بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ) (۱۸۸: ۴۰)

تاریخ مامے کنجزل یہ مامن : ہر گیج ن سمجھنا
ونہیں جو بُوش ہوتے ہیں اپنے پر اور یا ہتے
ہیں کہ بے کیے اس کی تا’ریخ ہو ائسے کو ہر گیج
اجرا بے دُور ن جاننا اور اس کے لیے دُور ناک
اجرا بے دُور ناک

آج بنتا ہے مُعَذَّلَہ جو بُوكہ ہشر میں اے
ہاے رُسْوَادِ کی آفتاب میں ہے ہمُونگا یا رَبِّ

(وَسَارَتِہ بَحْشَشَا، س. ۹۱)

(۲) لوگوں کی ماجھت کا بُوکہ : لوگوں کی تاریخ سے ماجھت ہونے (آپُوں
بُورا بُلما کہے جانے) کا بُوکہ یہ س تاریخ دُور کیا جا سکتا ہے کہ آپ اپنے جے ہن
بننا لیجیے کہ کسی کے ماجھت کرنے (آپُوں بُورا بُلما کہنے) سے ن میری موت
جَلَّی آ جائے گی اور ن میرے ریڑھ میں کبھی بُشی ہو گی، اگر میرا رَبِّ مُعْجَ
سے راجی ہے تو فیر لوگوں کی ماجھت اور یہن کی تاریخ سے کیا جانے والی یہ ہمارے
نارا جی میرا بُلما بھی بیکا نہیں کر سکتی۔ یہ لوگ تو بُوکہ ماجھبُور و آجیا ہے



فِرَمَانِ مُوسَىٰ فِي مُوسَىٰ : جس کے پاس میرا جنگ ہوا اور اس نے موج پر ہوڑد شریف ن پڑا (عبارت) (عبارت)

کے اپنے لیے نکھل و نوکسان اور جنگی و موت کے مالیک نہیں تو میں کیون ہن کی ماجمت کے بھوک سے نہ ک املا کر دیا چوڑ، میں سیف اپنے ربا عزوجل کے کھڑو گاہ سے درنا چاہیے۔

(۳) مال و دللت کی حیثیت : مال و دللت کی حیثیت سے نژادت ہاسیل کرنے کے لیے اپنا ہس ترہ ٹھنڈن بنائیے کے مال دنے اور روکنے کے سلسلے میں لوگوں کے دل اعلیٰ تبا-ر-ک و تआلہ ہی کے کچھ میں ہیں، میں جن لوگوں کی باتیں ریاکاری یا' نی دیباوے کا املا کرنے لگا ہوں وہ تو بود مجبورے مذکور ہے، ریڑک دنے والی جات سیف و سیف رجہ کامنات عزوجل کی ہے۔ جو شایستے لوگوں کے مال کا لالخ ربتا ہے وہ ایلیلو رسوہ ہو جاتا ہے اور اگر اسے مال بیل بھی جائے تو دنے والے کے اہلساز تک دبنا پڑتا ہے، تو جب ریا کارانا املا کے سبب مال کا بیلنا بھی یکینی نہیں اور جیلتو رسوہ کا اندرشا بھی پورا ہے تو کسی میں کیون نہ کاموں کے ایسے لوگوں کو معتاب اسی کر کے ہن سے مال ہاسیل کرنے کی کوشش کر دیں؟ بس میں اپنے ربا عزوجل ہی کو راجی کرنے کے لیے ہبادت اور ہر ترہ کے نہ کام کیا کر دیں۔

پیدا میرا ہنیا کی مہربت سے ہو گا ہے

یا ربا میں دیوانا مدائیں کا بناء ہے

(واسیلہ بخشش، ص 100)

صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَوَاتُ اللَّهِ عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿غُوثاً ہلاؤ﴾ اپنے آماں میں ہلساں پیدا کیجیے

سرکارے والہا تباہ، بے کسی کے مددگار، اکا صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم فرمائے ہے: اے لوگو! اعلیٰ عزوجل کے لیے ہلساں کے ساتھ املا کرو کیونکے اعلیٰ عزوجل وہی آماں کبھل فرماتا ہے جو اس کے لیے ہلساں کے ساتھ کیے جاتے ہیں اور یہ ن کہو کے یہ (املا) اعلیٰ عزوجل کے لیے اور ریشتہداڑی کے لیے۔

(سنن دارقطنی ج ۱ ص ۷۲ حديث ۱۳)



کوئی مسجد میں مسجد کا صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم : جو مسجد پر رہے ہو جو مسجد ہے۔ دوسرے شریف پڑھے گا۔ میں کیا ملت کے دن اس کی شفا آت کر دے گا۔ (کنز العمال)

حَلَّا سَكَنٌ بِيَوْمِ الْحِجَّةِ إِذَا حَرَثَتِ الْمَدِينَةُ : دا'�تے ہی سلامی کے ہی شاہتی ہی دارے مکتوب باتوں میں مددینا کے متبوع آتا ترجمے والے پاکیزا کوران، ”کنجزوں ہی مان ماء بحراں نوں ہر روزان“ سلف 892 تا 893 پر پارہ 25 سو-رتوشہر آیات نمبر 20 میں اعلیاءؑ کے عروج فرماتا ہے :

مَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْأَخْرَةِ نَزَدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ وَمَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا لَوْتَهُ مِنْهَا وَمَالَهُ فِي الْأَخْرَةِ مِنْ نَصِيبٍ ترجمہ مکتوب میں آبیت کی بھتی یا ہے ہم اس کے لیے بھتی باداً اور جو ہونے کی بھتی یا ہے ہم اسے اس میں سے کوچھ دے گے اور آبیت میں اس کا کوچھ ہیسسا نہیں۔

تفسیر نوعل ہر روزان سے ہیس آیاتے معبا-رکا کے معبطیں ہیس کی تفسیر میں ہے۔ جو آبیت کی بھتی یا ہے یا نی اعلیاءؑ کی ریزا اور جنابے مسٹانہ ہو : ﴿جو آبیت کی بھتی یا ہے﴾ یا نی اعلیاءؑ کی بھتی یا ہے، ریزا کے لیے آماں ن کرے ﴿ہم اس کی بھتی باداً اور یا نی اسے ہیس نہیں کی تو فیکھ دے گے، نک کام آسائیں کر دے گے، آماں کا سواب بے ہیس بخشون گے۔ ﴿اوہر جو ہونے کی بھتی یا ہے﴾ کے مددوں ہونے کے لیے نہیں کرے، ہرگز اس و جاہ (اوہر شوہرت و وادا و جاہ) کے لیے آلبیم، ہاچ بانے، (ماں) گانیمات (پانے) کے لیے گانی (بانے)، ﴿اوہر آبیت میں اس کا کوچھ ہیس نہیں﴾ کیونکہ اس نے آبیت کے لیے املا کیے ہی نہیں۔ ماں لبم ہوا کے ریاکار سواب سے مددوں رہتا ہے مگر شرائیں ہیس کا املا ہو رہا ہے، ریزا کی نمائی سے فرج آدا ہو جائے گا، مگر سواب ن ملے گا۔ ہیس لیے ﴿فِ الْأَخْرَةِ﴾ (یا نی آبیت میں اس کا کوچھ ہیس نہیں) کی کہت لگا ایں۔

(نوعل ہر روزان، ص 774)

مُعْلِسٌ كَمَا لَمْ يَرَهُ مَرْحُورٌ كَرَتَاهُ : ہو جو پاک، ساہی بے لولائی، سایا ہے افسلائی کا فرمانے آلبیشان ہے : ”اگر تु م میں سے کوئی شایس کیسی اسی سبجت یا ہیں میں کوئی املا کرے جس کا ن تو کوئی داروازا ہو

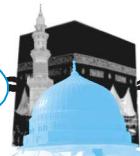


ਫਰਮਾਨੇ ਮੁਸਤਕਾ। **مُحَمَّدٌ** ﷺ: صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

और न ही रोशन दान, तब भी उस का अमल आहिर हो जाएगा और जो होना है हो कर रहेगा।” (مسند امام احمد بن حنبل ج ٤ ص ٥٧ حدیث ١١٢٣٠)

(ਮਿਰਆਤੁਲ ਮਨਾਇਦ, ਖ਼ि. 7, ਸ. 145)

ਮੁਖਿਲਿਸ ਕਿਸੇ ਕਹਤੇ ਹੋਣਾ : “ਈਨਸਾਨ ਮੁਖਿਲਿਸ ਕਬ ਹੋਤਾ ਹੈ” ਈਸ ਬਾਰੇ ਮੌਜੂਦਾ ਅਥਵਾ ਮੁਖਿਲਿਸ ਕੇ ਚਾਰ ਅਕਵਾਲ ਮੁਲਾ-ਛਜਾ ਹਨ : ॥੧॥ ਹਜ਼ਰਤੇ ਸਾਧਿਦੁਨਾ ਧਨ੍ਡਯਾ ਬਿਨ ਮੁਆਜ਼ ਰਖਮੁਹੱਮਦ^{صلی اللہ علیہ و آله و سلم} ਦੀ ਸੁਵਾਲ ਹੁਵਾ : ਈਨਸਾਨ ਕਬ ਮੁਖਿਲਿਸ ਹੋਤਾ ਹੈ ? ਫਰਮਾਯਾ : ਜਬ ਸ਼ੀਰ ਘਵਾਰ (ਧਾ'ਨੀ ਧੂਧ ਪਿਤੇ) ਬਚ੍ਚੇ ਕੀ ਤਰਫ਼ ਉਸ ਕੀ ਆਢਤ ਹੋ, ਸ਼ੀਰ ਘਵਾਰ ਬਚ੍ਚੇ ਕੀ ਕੋਈ ਤਾ'ਰੀਝ ਕਰੇ ਤੋ ਉਥੇ ਅਥਥੀ ਨਹੀਂ ਲਗਤੀ ਔਰ ਮਜ਼ਮਮਤ ਕਰੇ ਤੋ ਬੁਰੀ ਨਹੀਂ ਲਗਤੀ. ਤੋ ਜਿਸ ਤਰਫ਼ ਵੋਹ ਅਪਨੀ ਤਾ'ਰੀਝ ਵ ਮਜ਼ਮਮਤ ਦੇ ਬੇ ਪਰਵਾਹ ਹੋਤਾ ਹੈ ਈਸੀ ਤਰਫ਼ ਈਨਸਾਨ ਜਬ ਅਪਨੀ ਤਾ'ਰੀਝ ਵ ਮਜ਼ਮਮਤ ਕੀ ਪਰਵਾਹ ਨ ਕਰੇ ਤੋ ਮੁਖਿਲਿਸ ਕਹਾ ਜਾ ਸਕਤਾ ਹੈ (تَنْبِيَةُ الْمُغْتَرِبِينَ ص ٢٤) ॥੨॥ ਹਜ਼ਰਤੇ ਯੁਨਾਨ ਮਿਸਰੀ ਦੀ ਸੇ ਕਿਸੀ ਨੇ ਪ੍ਰਭਾ : ਆਏ ਮੀ ਕੋ ਕਿਸ ਤਰਫ਼ ਮਾ'ਲੂਮ ਹੋ ਕੇ ਵੋਹ ਮੁਖਿਲਿਸ ਹੈ ? ਫਰਮਾਯਾ : ਜਬ ਵੋਹ ਆਮਾਲੇ ਸਾਲਿਹਾ (ਧਾ'ਨੀ ਨੇਕਿਆਂ) ਮੌਜੂਦ ਕੋਣਿਅਤ ਸੰਝ ਕਰ ਦੇਨੇ ਕੇ ਬਾਵੁਜੂਦ ਈਸ ਬਾਤ ਕੀ ਪਸਾਨਦ ਕਰੇ ਕੇ ਮੈਂ ਮੁਅਝੁਆਜ਼ (ਧਾ'ਨੀ ਈਝੁਆਜ਼ ਵਾਲਾ) ਨ ਸਮਝਾ ਜਾਓਂ (ایضاً ص ۲۳) ॥੩॥ ਕਿਸੀ ਈਮਾਮ ਦੇ ਪ੍ਰਭਾ ਗਿਆ : ਮੁਖਿਲਿਸ ਕੌਨ ਹੈ ? ਫਰਮਾਯਾ : ਮੁਖਿਲਿਸ ਵੋਹ ਹੈ ਜੋ ਅਪਨੀ ਨੇਕਿਆਂ ਈਸ ਤਰਫ਼ ਛੁਪਾਏ ਜਿਸ ਤਰਫ਼ ਅਪਨੀ ਬੁਰਾਈਆਂ ਛੁਪਾਤਾ ਹੈ (الرَّوَاجِح ۱ ص ۱۰۲) ॥੪॥ ਏਕ ਅਤੇ ਬੁਜੂਰਾ^{صلی اللہ علیہ و آله و سلم} ਦੇ ਅੱਖਾਂ ਕੀ ਗਈ : ਈਖਲਾਸ ਕੀ ਹਦ ਕਹਾਂ



ਕੁਰਮਾਨੇ ਮੂਸਤਕਾ : **ਤੁਮ ਜਹਾਂ ਭੀ ਹੋ ਸੁਜ ਪਰ ਫੁਕੁਦ ਪਥੋ ਕੇ ਤੁਮਹਾਰਾ ਫੁਕੁਦ ਸੁਜ ਤਕ
ਪਹੁੰਚਿਆ ਹੈ।** (طریقہ).

तक है ? फरमाया : ये ह के तुम्हें ये ह खाइश ही न रहे के लोग तुम्हारी ता'रीफ करें। (आप)

ਧਕਸਾਂ ਹੋ ਮਹੁਹੋ ਅਮ ਮੁਝ ਪੇ ਕਰ ਦੀ ਕਰਮ

ਨ ਖੁਸ਼ੀ ਹੋ ਨ ਗਮ ਤਾਜ਼ਦਾਰੇ ਹਰਮ

(વસાઈલે બજીશાશ, સ. 271)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ਪਾਂਧਰਾਂ ਈਲਾਜ ਨਿਵਾਰਕ ਦੀ ਹਿਫ਼ਜ਼ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

(تَبْيَةُ الْمُغَرِّبِينَ ص ٢٥)

नियत की तारीफ : नियत लु-गवी तौर पर दिल के पुण्ठा (या'नी पक्के) ईरादे को कहते हैं और शरअन ईबादत के ईरादे को नियत कहा जाता है। (माझूँ अज तुझूँहतुल कारी शहै सहीहुल बुभारी, जि. 1, स. 226) नियत की अहमियत दिल में उजागर करने के लिये सात रिवायात मुला-हजा फरमाईये :

“ચલ મદીના” કે સાત હુર્રુફ કી નિરબત સે અખી નિયત કી ફળીલત પર મળ્ણી 7 ફરામીને મુસ્તફા

﴿1﴾ આ'માલ કા દારો મદાર નિયતો પર હૈ ઔર હર શખ્સ કે લિયે વોહી હૈ જિસ કી વોહ નિયત કરે (بخاري ج ١ ص ٦ حديث) ﴿2﴾ મુસલમાન કી નિયત ઉસ કે



فَرَمَأَنَ مُؤْسِطَكَ : مَنْ أَنْهَى اللَّهَ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْوَسْلَمُ فَإِنَّمَا هُوَ دُعَى بِهِ وَمَنْ أَنْهَى
سَوْءَاتِنَ مَنْ أَنْهَى لَهُ فَرَمَأَنَ (بخاری)

امال سے بہتر ہے (۱۸۵ حدیث ص ۱۸۵) **﴿۳﴾** سچی نیخت سب سے افسوس
امال ہے (۱۲۸۴ حدیث ص ۸۱) **﴿۴﴾** ایشی نیخت باندھ کو جنت میں داہیل
کرے گی (۶۸۹۵ حدیث ص ۳۰۵) **﴿۵﴾** اہلہ احمد عزوجل آذیت کی نیخت
پر ہونیا اتنا فرمائے تھے لیکن ہونیا کی نیخت پر آذیت اتنا فرمائے سے
یہ نکار کر دیا گی (۵۶۹ حدیث ص ۱۹۳) **﴿۶﴾** سچی نیخت ارش سے معاشر کے
پس جب کوئی باندا سچی نیخت کرتا ہے تو ارش ہیلے لگا جاتا ہے، فیکر یعنی باندھ
کو بخش دیا جاتا ہے (۶۹۲۶ حدیث ص ۴۴۴) **﴿۷﴾** جس نے نہ کی کا یہ رادا
کیا فیکر یعنی نہ کیا تو یعنی ایک نہ کی لیجھی جائے گی۔

(صَحِيفَ مُسْلِمٍ ص ۷۹ حديث ۱۳۰)

اَيَّهُ اَيَّهُ نِيَّتُكُمْ كَمْ بُدَّلَتْ

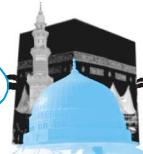
بَنَدَهُ مُعْلِمَتْ بَنَاهُ، كَرَ اَفْسَدَ مَرْتَهُ بَنَاهُ

صَلَوَاعَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿۷۸﴾ یہ لایا جو دُورانے یہ بادت شیتانی وسوسو سے بچیے

میठے میठے یہ سلامی بآئیو ! یہ بخیاں کبھی لیتھیت کی کونچ (چابی) ہے،
لیکن اس ترک نے کامال سے پھلے دیل میں یہ بخیاں ہونا جڑی ہے یہ سی
ترک ہر نہ کی و یہ بادت کے دُوران یہ سے کاہم رخنا بھی جڑی ہے کیونکے شیتان
مُسَلَّسَلَ ہمارے دیل میں وسوسو ڈالنے کی کوشش میں لگا رہتا ہے۔ ہمارے
سچیدنیا کوئی بین یہاں علیہ رحمة الله الرحمن رکنے کے لئے نہیں اسی میں اماں
میں ساہیر (اماں جو گار) سے یہاں ہوشیار نہ ہوگا (شیتان کے جانے میں اماں
کو) جڑی ریاکاری میں ہنس جائے گا۔

(تَبَيَّنُ الْغَرَبَيْنَ ص ۲۲)



۴۲ مانے مُوسَّتَافٌ : جس کے پاس میرا جیک ہو اور وہ مُوْلَیٰ پر ہُدُود شریف ن پہنچے تو وہ لागوں میں سے کنجُوں ترین شapsا ہے۔ (تہذیب)

ઇبادت میں وسوسوں سے نجات کے لیے تین یہیں اڑری ہے : ایجادت کے دوڑانہ شہزادی وسوسوں سے ڈھٹکا رکھنے کے لیے تین یہیں اڑری ہے : ۱) اس وسوسے کو پہچاننا ۲) اسے نا پسند کرنا اور ۳) اسے کبھی کرنے سے ہنگار کرنا۔ م-سلن کیسی نے ایکی ایکی نیتیں کر کے نہماں تہذیب شروع کی، اب دوڑانے نہماں شہزادی نے دل میں ریاکاری کا وسوسا ڈالا کہ جب لوگوں کو میری تہذیب گزائی کا پتا چلے گا تو وہ مُوْلَیٰ سے بہت مُوتھیسیس رہے گے، اب اس وسوسے کو فیروز توار پر پہچاننا کے لئے شہزادی کی ترکی سے ہے اس نہماں کے لیے بہت اڑری ہے۔ فیکر اسے نا پسند بھی جانے کے بآلیک گزیل کی ریزا کے لیے جانے والے املا سے ماحلوک کو مُوتھیسیس کرنے کی کوشش کرنا گ-ابے ہلکا ہی کو دا'vat دنے کے مُوتھاراہی ہے، فیکر اس وسوسے سے اپنی تہذیب ہٹا لے۔ اگر یہ کام مُوکشیل اڑر ہے مگر نہیں، آگاہ میں یہ کام بہت کثیر ماحسوں ہوتا ہے، لئکن جب تکلیف کر کے اسے تک اس پر سچھ کرے تو اخلاق اسلام کے فکر کو اور ہونے توں کی سے یہ کام آسان ہو جاتا ہے، ہمارا کام کوشش کرنا ہے، کامیابی دنے والی جات گے کا ائمہ اسی نہیں کی ہے : پارہ 21 سو-رتوں انکبُوت آیات نمبر 69 میں اخلاق اسلام کا ایجاد اسی کام کا ہے :

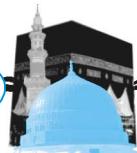
وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِيْنَا اللَّهُ يَعِيْهُمْ
سَبِّلُنَا وَإِنَّ اللَّهَ لَعَمُ الْمُحْسِنِينَ
(۶۹: ۲۱)، العنكبوت

تہذیب میں کنجوں ایمان : اور جنہوں نے ہماری راہ میں کوشش کی اڑر ہم ہنہ اپنے راستے دی�ا ہے اور بے شک اخلاق اسلام نہ کوئی کے ساتھ ہے۔

تُو شہزادی کے شر سے بچا یا ہلکا
ہو دل وسوسوں سے سفا یا ہلکا
مُوْلَیٰ وسوسوں سے بچا یا ہلکا
ہو شر ہر شہزادی کا یا ہلکا

امین بجا الہی الامین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم

صلوٰۃ اللہ علی الحبیب ! صلی اللہ تعالیٰ علی محمد



કરમાને મુશ્તકફા (ગુણીલા અધ્યાત્મિક પદ્ધતિ) એસ શખ્સ કી નાક ખાક આલૂદ હો જિસ કે પાસ મેરા તિક હો ઓર વોહ મજ પર્ય દુર્દેખ પાક ન પઢે (ગા.)

«સાતવાં ઈલાજ» ટન્હાઈ હો યા હુજૂમ ચક્સાં અમલ કીજિયે

(سنن ابن ماجه ٤٦٨ حديث ٤٢٠، ص)

(મિરાતુલ મનાજીહ, જી. 7, સ. 140)

ઇમામ સિરી નમાજ મેં ભી કવાઈદે તજ્વીદ કી રિઆયત કરે : મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈઓ ! હમેં ચાહિયે કે તજ્વીદ મેં હોં યા ઈસ્લામી ભાઈઓં કે દરમિયાન દોનો

ਤੁਲਾਨਾ ਜਾਹਿਰਾ! ਛੁਨ ਚਾਲਕ ਤੁਹਾਡਾ ਹੈ ਭਾ ਪਾ ਠੁਲਾਨਾ ਜਾਹਿਰਾ ਤੁਹਾਨਪਾਂ, ਫਾਲ
ਜਗਾਵ ਅਮਲ ਕੋ ਧਕਸਾਂ ਅਨਦਾਝ ਮੌਕੇ ਕਰਨੇ ਕੀ ਖੂਬ ਕੋਣਿਕਾ ਕਰੇਂ। ਮ-ਸਲਨ ਜਿਸ ਖੁਸ਼ੀਆਂ
ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਦੇ ਲੋਗਾਂ ਕੇ ਸਾਮਨੇ ਨਮਾਝ ਪਥਤੇ ਹੋਏ ਵੋਹੀ ਅਨਦਾਝ ਅਕੇਲੇ ਮੌਕੇ ਵਿੱਚ ਭੀ ਕਾਈਮ ਰਖੋ, ਈਮਾਮ
ਸਾਹਿਬ ਕੋ ਚਾਹਿਏ ਕੇ ਜਿਸ ਤਰਫ ਜਹਰੀ (ਧਾ'ਨੀ ਬੁਲਨਾ ਆਵਾਜ਼ ਵਾਲੀ ਕਿਰਾਅਤ ਕੀ) ਨਮਾਯਾਂ
ਮੌਕੇ ਕਵਾਈਓ ਤਥਵੀਓ ਕੀ ਰਿਆਧਤ ਕਰਤੇ ਹੋਏ, ਸਿਰੀ (ਧਾ'ਨੀ ਆਹਿਸਤਾ ਕਿਰਾਅਤ ਵਾਲੀ)
ਨਮਾਯਾਂ ਮੌਕੇ ਵਿੱਚ ਭੀ ਧੇਹੀ ਕਰੇਂ। ਨੀਤ ਹਮ ਜੋ ਕਾਮ ਲੋਗਾਂ ਕੇ ਸਾਮਨੇ ਕਰਨਾ ਪਸਾਨਾ ਨਹੀਂ ਕਰਤੇ
ਤਨਾਈ ਮੌਕੇ ਵਿੱਚ ਭੀ ਨ ਕਿਯਾ ਕਰੇਂ। ਸ਼ਾਫੀਉਲ ਮੁਸਲਿਮਿਨ, ਅਨੀਸੁਲ ਗਰੀਬੀਨ, ਸਿਰਾਜੁਸ਼ਾਲਿਕੀਨ
ਅਤੇ ਕਾਫ਼ੀ ਮੁਬੈਨ ਮੁਖੀਨ ਹਨ : “ਜੋ ਕਾਮ ਲੋਗਾਂ ਕੇ ਸਾਮਨੇ ਕਰਨਾ ਨਾ ਪਸਾਨਾ ਕਰਤੇ
ਹੋ ਵੋਹ ਤਨਾਈ ਮੌਕੇ ਵਿੱਚ ਭੀ ਨ ਕਿਯਾ ਕਰੋ।”

(الْجَامِعُ الصَّغِيرُ لِلْسُّيُوفِيِّ ص ٤٨٧ حديث ٧٩٧٣)

बचा मुझ को शैतां की मक्कारियों से

ખૂદા બહરે હૈદર રિયાકારિયો સે

أَمِينٌ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ



કરમાને મુખ સત્કા : ચલી લાલ તાલુ અને વીલ સ્લેમ (ગ્રેગેલ). જિસ ને મુજ પર રોજે જુમુઆ દો સો બાર હુકુમે પાક પણ ઉસ કે દો સો સાલ ક શાનાઈ માયાંક હોય.

આઠવાં ઈલાજ નેક્ટિયાં છુપાઈયો

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! કાશ ! યેહ સાંઘાત મિલ જાએ કે હમ અપની નેકિયો કો ભી ઈસ તરહ છુપાએં જિસ તરહ અપને ચુનાણો કો છુપાતે હું ઔર બસ ઈસી કો કાફી સમયેં કે અલ્લાહ તઆલા હમારી નેકિયાં જનતા હૈ. બિલ ખુસૂસ પોશીદા નેકી કરને કે બા'દ નફસ કી ખૂબ નિગરાની કી જાએ ક્યુંકે હો સકતા હૈ યેહ ઈબાદત જાહિર કરને કી હિર્સ નફસ કે અનદ્ર જોશ મારે ઔર વોહ કુછ ઈસ તરહ ફંસાને કી તરકીબ કરે કે અપની યેહ ઈબાદત લોગોં પર જાહિર કર દે કે ઈસ તરહ નેકિયાં છુપાએ રખને સે જબ લોગોં કો તેરે મકામ વ મર્તબે કા ઈલ્મ હી નહીં હોગા તો વોહ બેચારે તેરી પૈરવી સે મહરૂમ રહ જાયાંગે, ઐસે મેં તૂ લોગોં કા મુક્તદા (યા'ની પેશવા વ રહનુમા) કેસે બનેગા ? તેરે ઝરીએ નેકી કી દા'વત કેસે આમ હોગી ? વગૈરા. ઐસી સૂરત મેં અલ્લાહ તઆલા સે ઈસ્લિકામત વ સાબિત ક-દમી કી દુઆ કરની ચાહિયે ઔર અપને અમલ કે બદલે મેં મિલને વાલી જનત કી અગીમુશાન દાઈભી ને'મત યાદ કરની ચાહિયે. ખુદ કો ડરાના ચાહિયે કે જો શખ્સ અલ્લાહ તઆલા કી ઈબાદત કે ઝરીએ ઉસ કે બન્દોં સે અજ (યા'ની બદલે) કા તાલિબ હોતા હૈ ઉસ પર અલ્લાહ તઆલા કા ગંગબ નાભિલ હોતા હૈ ઔર યેહ ભી હો સકતા હૈ કે દૂસરોં કે સામને અપના અમલ જાહિર કરને કી વજદ સે વોહ ઉન કે નજદીક તો મહબૂબ (યા'ની ઘારા) હો જાએ લેકિન અલ્લાહ તઆલા કે નજદીક ઉસ કા મકામ વ મર્તબા ગિર જાએ ! તો કહીં ઈસ તરહ મેરા અમલ ભી જાયેઅ ન હો જાએ ! ફિર નફસ કી ઈસ તરહ સમજાએ કે મેં કિસ તરહ ઈસ અમલ કો લોગોં કી તા'રીફ કે બદલે બેચ દું વોહ તો ખુદ આજિઝ વ લાચાર હું ન તો વોહ મુજે રિઝુક દે સકતે હું ઓર ન હી મૌત વ હૃદાત કે માલિક હું.

પોશીદા અમલ અફ્ગન હૈ : પોશીદા અમલ કે ફજાઈલ પર ભી ગૌર કરે જૈસા કે નબિયે પાક, સાહિબે લૌલાક, સચ્ચાહે અફ્લાક કા ફરમાને ફરીલત નિશાન હૈ : જાહેરી અમલ કે મુકાબલે મેં પોશીદા અમલ અફ્ગન હૈ.

(شعب الأيمان ج ٥ ص ٣٧٦ حديث ٧٠١٢)



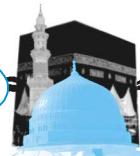
۴۲ مانے مُسْتَكَفٌ : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : مُؤْمِنٌ پر دُعَوَاتُ شَرِيكٍ پਛੇ اُخْلَاكٍ عَزَّ عَزَّ جَلَّ تُوْمُ پر رَحْمَاتُ بَرْجَهَهَا . (بُرْجَهَهَا)

امال کے یہاں کی اُوک سُورت : اُسے شَبَّسٌ کے جِس کی پُرِیٰ کی جاتی ہے وہ لोگوں کو رَبَّتُ دِلَانے کی نیت سے اُسے اُمالِ یا ہدایت کر سکتا ہے جب کہ اُس یہاں میں ریخا کی آمدیش نہ ہے۔ اُس ترک یہاں کے ساتھ اُمال کے یہاں سے وہ سوابے اُجیم کا ہکداہ ہے۔ چنانچہ اُوک ہدیہ سے پاک میں ہے : جب احوالیہ اُمال کی پُرِیٰ کی جائے تو وہ (یا ہدایت کیا جانے والہ اُمال) ڈھپ کر کیا جانے والے اُمال سے افسوس لے۔ (ایضاً)

آجیگی کی ہنستی : اپنا پوشیدا اُمال تہذیب سے نہ مبت پا دوسروں کی رَبَّتُ دِلَانے کے لیے یا ہدایت کرنے سے پہلے بُوْبَ ایسی ترک گُور کر لئے کی ہاجت ہے کہ کہیں یہاں شہزادی کی یاد تھی نہیں ! کہیں میں ریخا کی میں تو نہیں جا پڑے گا۔ اُس لِیْمَ میں ہمارے بُوْبَوْنَیْنَ دینِ ﷺ کی ہنگامی بے میساں ہے چنانچہ ہمارے سایہ ہونا سُوْفَیَانَ سُوْرَیَ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوْیِ فرماتے ہیں میں نے جس کو ہدایت کر کے کیا ہیں، ان کو نہ ہونے کے برابر سمجھتا ہوں کیونکہ جب لوگ دُبَر رہے ہوں اُس وقت یہاں کا بارکی رَبَّنَا ہم جس سے کوئی درت سے باہر رہے ہیں۔ (تَبَيَّنَ الْمُغْرِبَيْنَ ص ۶۱)

بُسَرَے کی ہر گلی سے تیلَّاوت کی آواز آتی ہے : ہُوْجُجُتُلِ یَسْلَامِ ہمارے سایہ ہونا یہ مامِ ابُو ہَمِیْدِ مُوْلَمَدِ بِنِ مُوْلَمَدِ گَنَّالِی تیلَّاوتے ہیں : کسی زمانے میں بُسَرے کی ہر گلی سے لِیْکے ہلَّاہی اور تیلَّاوتے کو رَبَّانے کریم کی آواز بُولنَد ہوتی ہی اور اُس ترک لोگوں کو لِیکو اُجکار کی رَبَّتُ دِلَانی میلاتی ہی۔ ہنگامہ کن اُس زمانے میں کسی آلیم ساہیب نے ”ریخا کی باریکیوں“ کے بارے میں اُوک رِسَالا تہذیریں فرمائیا، تو تمَامِ لَوَّگوں نے بُولنَد آواز سے لِیکو تیلَّاوت کرنے بَنَد کر دیا۔ اُس پر کوئی لَوَّگوں نے کہا : کاش ! ان آلیم ساہیب نے یہاں رِسَالا ن لی�ا ہوتا !

(کَيْيَاتِ سعادتِ ج ۲ ص ۶۹۲)



કરમાને મુસાફિક : મણી થાંગાની ઉલ્લેખ એવી હતી કે પાક પદો બેશક તુમહારા મુજા પર હુક્કે પાક પદના તમારે યુનાઓનું કે લિયે માઝિકરત હૈ. (અનુભાવ)

ਅਨ ਤੋ ਨ ਕਿਧੇ ਹੁਏ ਅਮਲ ਮੌਂ ਭੀ ਰਿਖਾਕਾਰੀ ਕੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ : ਹਜ਼ਰੇ

سالیٰ نا ہو جائے ل بین ۱۷۵ فرماتے ہیں : ہم نے پھلے تو لوگوں کو
ہس ہالات میں پایا تھا کہ وہ عن نہ کیوں میں ریخا کرتے تھے جو وہ کرتے تھے اور
اب لوگوں کی وجہ ہالات ہے کہ وہ عن باتوں میں ریخا کرتے ہیں جو وہ نہیں
کرتے۔ (تہبیۃ النّعفَرَیْن ص ۲۵) یا' نی پھلے لوگ مخلوق کو راجی کرنے کے لیے نہ ک
کام کرتے تھے اور اب نہ کام بھی نہیں کرتے بلکہ نہ کوئی کی سوچت بنا کر ہس
کا یقین دیتا نا چاہتے ہیں کہ وہ نہ کام کرتے ہیں پس وجہ پھلے کے ریخا کاروں سے
بھی بادتر ہیں.

ਨੇਕਿਆਂ ਛੁਪ ਕਰ ਕਰੋ ਐਸੀ ਹਿਦਾਯਤ ਹੈ ਪੁਦਾ

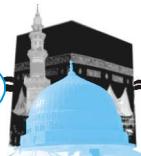
ਇਸ ਕੋ ਪੋਥੀਵਾ ਇਖਾਏਤ ਕੀ ਤੂ ਲੜ੍ਹਾਤ ਦੇ ਪੁਵਾ

أَمِينٌ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

صلوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

﴿ਨਵਾਂ ਈਲਾਜ﴾ ਸਿੰਫ ਅਖੀ ਸੋਹਨਤ ਮੇਂ ਰਹਿਏ

�ਲਵਾਹ ਤਥਾਲਾ ਕੇ ਮੁਖਿਲਿਸ ਬਨਦੋਂ ਔਰ ਆਸ਼ਿਕਾਨੇ ਰਸੂਲ ਕੀ ਸੋਛਭਤ ਅਗਰ
ਨਸੀਬ ਹੋ ਜਾਏ ਤੋ ਐਨ ਸਾਚਾਦਤ ਹੈ, ਉਨ ਕੇ ਕੁਝ ਔਰ ਉਨ ਕੀ ਤਰ੍ਫ ਸੇ ਵਕਤਨ ਵੱ
ਵਕਤਨ ਮਿਲਨੇ ਵਾਲੀ ਨੇਕੀ ਕੀ ਦਾ'ਵਤ ਕੀ ਬ-੨-ਕਤ ਸੇ ਦੀਗਰ ਫਵਾਈਦ ਕੇ ਸਾਥ ਸਾਥ
ਇਲਾਜ ਭੀ ਹੋਤਾ ਰਹੇਗਾ। ਧੇਹ ਧਾਇ ਰਹੇ ਕੇ ਸਿੰਫ ਵ ਸਿੰਫ
ਅਚਛੀ ਸੋਛਭਤ ਈਖਿਤਧਾਰ ਕਰਨੀ ਚਾਹਿਧੇ ਜ਼ਬ ਕੇ ਬੁਰੇ ਲੋਗਾਂ ਕੇ ਸਾਥੇ ਸੇ ਭੀ ਭਾਗਜਾ
ਚਾਹਿਧੇ। ਮਕੀ ਮ-੯ਨੀ ਸੂਲਤਾਨ, ਰਹਮਤੇ ਆ-ਲਮਿਤਧਾਨ, ਰਹਮਤੇ ਆ-ਲਮਿਤਧਾਨ
ਫਰਮਾਨੇ ਆਲੀਸ਼ਾਨ ਹੈ : ਅਚਛੇ ਔਰ ਬੁਰੇ ਮੁਸਾਹਿਬ ਕੀ ਮਿਸਾਲ, ਮੁਸ਼ਕ (ਧਾ'ਨੀ ਕਸ਼ਤੂਰੀ)
ਉਠਾਨੇ ਵਾਲੇ ਔਰ ਭਾਵੀ ਧੋਂਕਨੇ ਵਾਲੇ ਕੀ ਤਰਹ ਹੈ, ਕਸ਼ਤੂਰੀ ਉਠਾਨੇ ਵਾਲਾ ਤੁਮਹੈਂ ਤੋਹਫ਼ਾ ਦੇਗਾ ਧਾ
ਤੁਮ ਉਸ ਸੇ ਘਰੀਦੋਗੇ ਧਾ ਤੁਮਹੈਂ ਉਸ ਸੇ ਉਮਦਾ ਖੁਸ਼ਬੂ ਆਓਗੀ, ਜ਼ਬ ਕੇ ਭਾਵੀ ਧੋਂਕਨੇ ਵਾਲਾ



(صحیح مسلم من حديث ١٤١٤) يَا تُمَّالِرِ كَوْكَبِ الْجَلَاءِ يَا تُمَّالِرِ (عَسْ) سَهْ نَاهْ جَوَارِ بُو آهْ جَيْ.

ਚੰਗੇ ਬਨਦੇ ਹੀ ਸੋਛਿਅਤ ਧਾਰੇ ਜ਼ਿਵੀਂ ਫੁਕਾਨ ਆਤਾਰਾਂ

સૌદા ભાવેં મલ ન લયે હુલ્લે આન હજારાં

ਭੂਰੇ ਬਾਨ੍ਹੇ ਦੀ ਸੋਣਬਤ ਧਾਰੇ ਜ਼ਵੀਂ ਫੁਕਾਨ ਲੋਹਾਰਾਂ

કપડે ભાવેં કુંજ કુંજ બથ્યે ચિંગા પૈન હજારાં

(या'नी અથે શાખસ કી સોહબત અતાર (ય'ની ઈત્ત ફરોશ) કી દુકાન કી તરફ હે કે જહાં સે આદમી કુછ ન ભી ખરીદે મગર ઉસે ખુશ્ભૂ તો આ હી જતી હે ઔર બુરે શાખસ કી સોહબત લોહાર કી દુકાન કી મિસલ હે, જહાં અપને કપડોં કો જિતના ભી સમેટ કર રહેં, ચિંગારિયાં ઉસ તક પહોંચ હી જતી હેં)

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين أبا عبد الله عز وجله من الشفيعين الرشيقين بسم الله الرحمن الرحيم

سورة الرحمن
القتلوة والثلاص عليكم ياموال الله

(خداص) هرتو حمور اعمل بھی بھت۔ ۴۷ -



١٨ شعبان المختصر
١٤٢٢



Maktabatul
Madina

- 📍 Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai ☎ 9022177997, 9320558372
📍 Faizane Madina, Teen koniya Baghicha, Mirzapur, Ahmedabad ☎ 9327168200
📍 421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
📞 011-23284560, 8178862570 📩 For Home Delivery: 9978626025 TOP CARRY
✉ feedbackmmhind@gmail.com 🌐 www.dawateislamihind.net